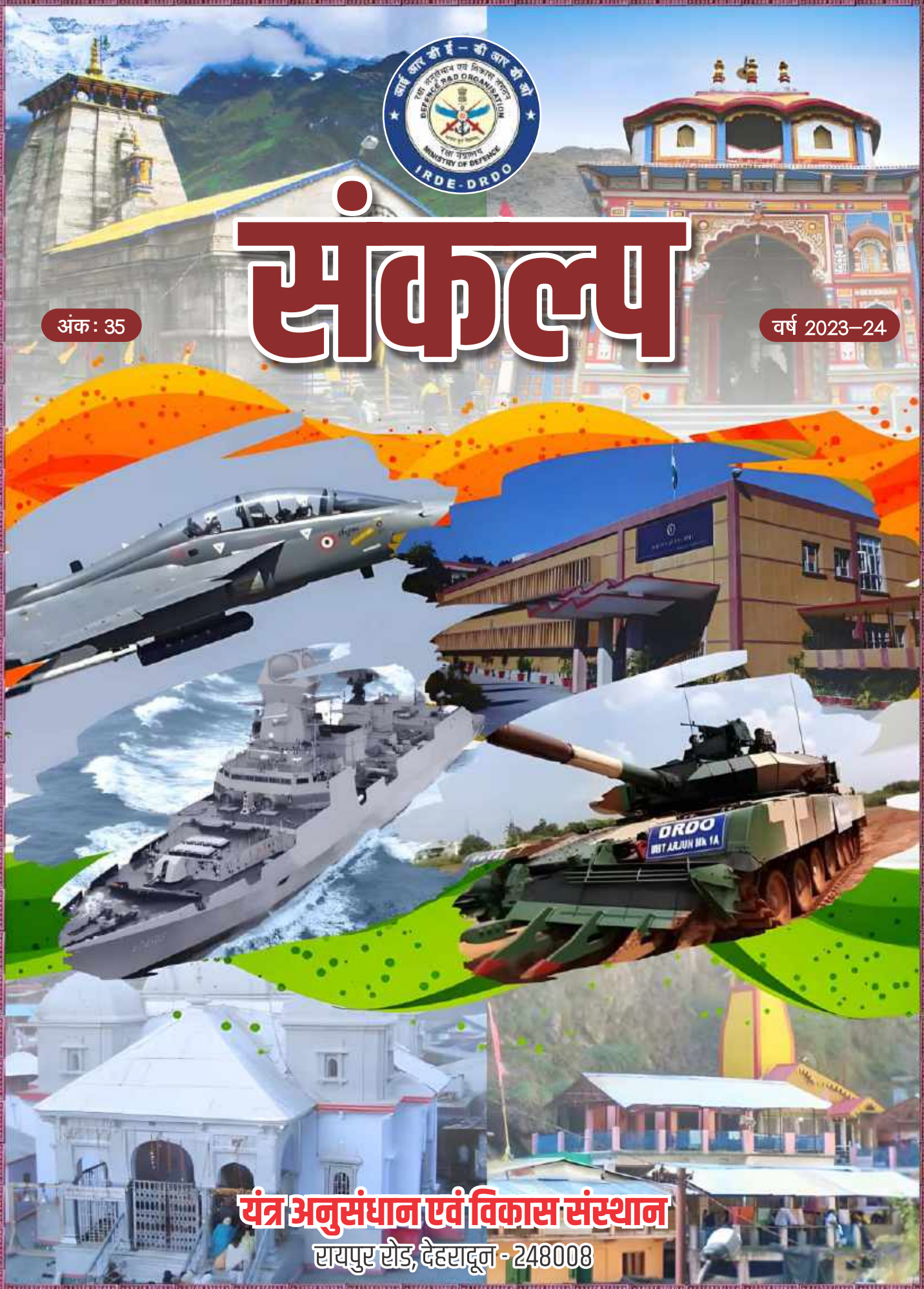

संकल्प

अंक : 35

वर्ष 2023–24

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान

रायपुर रोड, देहरादून - 248008

संरक्षक

डॉ. अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

श्रीमती रूमा ढाका
वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक

संपादक मण्डल

श्री पुनीत वाशिष्ठ
वैज्ञानिक 'जी', प्रधान संपादक

डॉ. ललित मोहन पंत
वैज्ञानिक 'एफ'
समूह निदेशक राजभाषा
उपाध्यक्ष, रा.का.स. संपादक

श्री कृष्ण मुरारी
तकनीकी अधिकारी 'सी'
सूमह प्रमुख राजभाषा
राजभाषा अधिकारी, सदस्य

श्री त्रिलोक सिंह
डी.पी.ओ., प्रभारी अधिकारी
राजभाषा, सदस्य

श्री पवन कुमार सूरज
तकनीकी अधिकारी 'बी', सदस्य

श्री मधूसूदन उपाध्याय
तकनीकी अधिकारी 'बी', सदस्य

श्री अमित कुमार पटेल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, सदस्य

(पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

संकल्प

पत्रिका

अंक : 35 वर्ष 2023–24

उच्च लक्ष्य यदि हो जीवन में,
मानव शक्ति न पड़ती अल्प।
जन–जन तक हिंदी पहुँचाएं,
सतत यत्न का ले 'संकल्प'।।

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान
रायपुर रोड, देहरादून - 248008

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि **यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून** इस वर्ष अपने संस्थान की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **'संकल्प'** के पैंतीसवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। विगत 34 वर्षों से निरन्तर स्तरीय ज्ञानवर्द्धक एवं सूचनापरक लेखों एवं रचनाओं तथा संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित जानकारियों से परिपूर्ण हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन संस्थान के कार्मिकों का हिन्दी के प्रति प्रेम और समर्पण को दर्शाता है।

इस संस्थान ने रक्षा सेवाओं के उपयोगार्थ प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को निर्धारित समय में कुशलता से पूर्ण किया है। राष्ट्र को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए जहां नित नये यंत्रों एवं प्रणालियों का अनुसंधान तथा सर्वांगीण विकास अत्यन्त आवश्यक है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के विकास के प्रति अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों का मजबूती से अनुपालन तथा निर्वहन भी अनिवार्य है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इस प्रकार के सफल एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 05 जनवरी, 2024

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax : 011-23018216 ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

यू जया शांथी
महानिदेशक (मानव संसाधन)
U Jeya Santhi
DIRECTOR GENERAL (HR)

सत्यमेव जयते

एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
201, द्वितीय तल, 'ए' ब्लॉक, डी आर डी ओ भवन
201, 2nd Floor, 'A' Block, DRDO Bhawan
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Rajaji Marg, New Delhi-110011

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, (आईआरडीई) देहरादून** द्वारा इस वर्ष वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका **'संकल्प'** अंक 35, वर्ष 2023-24 का प्रकाशन किया जा रहा है। संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका का सतत् प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रति कर्त्तव्यपरायणता और निष्ठा का परिचायक है।

इस संस्थान में प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास से संबंधित महत्त्वपूर्ण कार्यों को कुशलतापूर्वक लक्ष्य तक पहुंचाने का उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। इसके साथ-साथ राजभाषा हिन्दी का कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग किया जा रहा है। **'संकल्प'** पत्रिका के इस अंक में संकलित सरल एवं सहज हिन्दी भाषा में लिखे गये लेख लेखकों की सृजनात्मकता को उजागर करते हैं ।

हिन्दी जिसे संविधान में राजभाषा का दर्जा हासिल है उसमें सरकारी कार्य करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, इसका निरन्तर प्रचार - प्रसार करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

मैं वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका **'संकल्प'** अंक-35 वर्ष 2023-24 के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 04 जनवरी, 2024

यू जया शांथी
(यू जया शांथी)

दूरभाष/Telephone: 23016163, 23016132 फैक्स/Fax: 23016127 ई-मेल/E-mail : dghr.hqr@drdo.in

डॉ. बि के दास
महानिदेशक
(इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार प्रणाली)
Dr. B K Das
Director General
(Electronics & Communication Systems)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
कमरा सं– 439, 'बी' ब्लाक डी आर डी ओ भ
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली - 110011
Government of India, Ministry of Defence
Defence R&D Organisation
Room No. 439, 'B' Block, DRDO Bhawan,
Rajaji Marg, New Delhi-110011

संदेश

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून अत्याधुनिक प्रकाशीय एवं विद्युत प्रकाशीय यंत्रों एवं प्रणालियों से संबंधित विभिन्न नवीनतम प्रौद्योगिकियों तथा उपकरणों के अनुसंधान तथा विकास कार्यों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए देश की रक्षा सेवाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तथा रक्षा क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता हेतु राष्ट्र सेवा में समर्पित है। यह संस्थान अपनी विभिन्न परियोजनाओं के साथ-साथ राजभाषा नीति, नियम व निर्देशों के अनुपालन, कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु भी सदैव प्रयत्नशील रहा है।

यह हर्ष एवं गर्व का विषय है कि यह संस्थान इस वर्ष अपनी वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका **'संकल्प'** अंक 35, वर्ष 2023-24 का प्रकाशन कर रहा है। **'संकल्प'** पत्रिका के प्रस्तुत अंक के माध्यम से विभिन्न जानकारियों से युक्त साहित्यिक विषयों संबंधी लेख एवं रचनाएं पाठकों तक सरल व सुबोध भाषा में पहुंचाने का प्रयास प्रशंसनीय है।

साहित्य समाज का दर्पण है। संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका वहां की कार्य संस्कृति की परिचायक भी होती है। **'सकल्प'** पत्रिका के सभी लेखकों व रचनाकारों तथा संपादक मंडल का उत्साह सदैव बना रहे तथा राजभाषा हिन्दी के गरिमामयी वर्चस्व को बनाये रखने के लिए पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त रहे, इन सभी सद्भावनाओं के साथ मैं **'सकल्प'** पत्रिका के पैंतीसवें अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 04 जनवरी, 2024

(डॉ. बि. के. दास)

Telephone : (O) 011-23014372, 23793037 Fax : 011-23014791

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)
Dr. Ravindra Singh
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated : 03/01/2024

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि **यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान (आईआरडीई), देहरादून** द्वारा इस वर्ष अपनी वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका **'संकल्प'** के पैंतीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह संस्थान पिछले 34 वर्षों से अनवरत हिंदी गृह पत्रिका संकल्प का प्रकाशन कर रहा है, यह राजभाषा हिंदी के प्रति इनकी निष्ठा एवं समर्पित प्रेम तथा प्रबल इच्छाशक्ति को प्रदर्शित करता है। संस्थान द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधी सभी कार्यक्रमों को निर्धारित समय पर सम्पन्न कराने हेतु किया गया प्रयास राजभाषा नीति, अधिनियम, नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन का गौरवपूर्ण परिचायक है।

यह संस्थान प्रमुखत: प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अनुसंधान तथा विकास कार्यों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसके साथ-साथ राजभाषा के कार्यान्वयन के दायित्व का भी तत्परता और जिम्मेदारी के साथ निर्वहन कर रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में हिन्दी गृह पत्रिकाओं का महत्त्पूर्ण स्थान है। इन पत्रिकाओं का उद्देश्य हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की गरिमा और उसकी महत्ता को प्रतिष्ठित करना भी होता है। यह विशेषता **यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान** द्वारा प्रकाशित गृह-पत्रिका **'संकल्प'** में पूर्णरूपेण परिलक्षित होती है।

पत्रिका के संपादक मंडल तथा पत्रिका प्रकाशन से संबंधित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का प्रयास प्रशंसनीय है। **'संकल्प'** पत्रिका के अंक-35, वर्ष 2023-24 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 03 जनवरी, 2024

(डॉ. रविन्द्र सिंह)

डॉ अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एंव निदेशक
Dr. AJAY KUMAR
OUTSTANDING SCIENTIST & DIRECTOR

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान
रायपुर रोड, देहरादून – 248008 (उत्तराखण्ड)
GOVT. OF INDIA, MINISTRY OF DEFENCE
DEFENCE R & D ORGANISATION
INSTRUMENTS RESEARCH & DEVELOPMENT ESTT.
RAIPUR ROAD, DEHRADUN - 248008 (UTTARAKHAND)

दिनांक 21 जनवरी, 2024

संदेश

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून अत्याधुनिक प्रकाशीय एवं विद्युत प्रकाशीय यंत्रों एवं प्रणालियों से संबंधित विभिन्न उपकरणों के अनुसंधान तथा विकास कार्यों के सफल निर्वाह के साथ राष्ट्र सेवा में समर्पित है। यह संस्थान राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु भी सदैव प्रयत्नशील रहा है।

राजभाषा हिन्दी को सरकारी कामकाज में एक गौरवशाली स्थान दिलाना हमारा नैतिक दायित्व है। अतः इस दिशा में ठोस प्रयास किये जाने जरूरी हैं। वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' का संस्थान द्वारा नियमित प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावशाली स्तम्भ है। संस्थान के कार्मिक अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग के साथ - साथ संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका हेतु साहित्यक लेख एवं रचनाएं आदि लिखकर हिन्दी का स्वर्णिम पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

यह हर्ष का विषय है कि इस संस्थान द्वारा पिछले 34 वर्षों से लगातार हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका संकल्प वास्तव में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं लेखकों के अन्तकरण की सोच, भावों तथा विचारों को भी व्यक्त करने का माध्यम है। 'संकल्प' पत्रिका का यह अंक हम सब के लिए स्मरणीय रहे। इस अंक में संकलित लेखकों एवं रचनाकारों द्वारा लिखित विभिन्न साहित्यिक विषयों संबंधी लेख एवं रचनाओं की जानकारी सुधी पाठकों तक सरल व सुबोध भाषा में पहुँचेगी तथा इससे हमारे संस्थान की कार्य संस्कृति की सुगन्ध समाज के हर वर्ग तक पहुँचेगी। संकल्प पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु सभी लेखकों व रचनाकारों तथा संपादक मंडल का प्रयास प्रशंसनीय है। यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार – प्रसार के अपने उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को प्राप्त करे, इन अपेक्षाओं के साथ मैं वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' के 35वें अंक की सफलता के लिए हृदय से कामना करता हूँ।

अजय कुमार
(डॉ. अजय कुमार)
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून

दूरभाष / Phone : + 91 0135-2787169, 2787126
फैक्स / Fax : +91-135-2787161, 2787128
ई–मेल / E-mail : director.irde@gov.in
ajay.irde@gov.in

प्रधान संपादक की कलम से.....

राजभाषा हिंदी का सरकारी कामकाज में प्रयोग तथा प्रचार प्रसार करना हमारा संवैधानिक कर्त्तव्य है। अत: इस कर्त्तव्य के सफल निर्वाह हेतु यथासंभव प्रयास किये जाने आवश्यक हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में हिन्दी गृह पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्य समाज का दर्पण है। पत्रिकाओं के माध्यम से हमें नवीनतम जानकारियाँ तो मिलती ही हैं पत्रिका से संबंधित संस्थान की कार्य प्रणाली, उपलब्धियाँ तथा वहाँ की संस्कृति का परिचय भी मिलता है। यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान, देहरादून द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका '**संकल्प**' में ये गुण पूर्णत: परिलक्षित होते हैं ।

हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान, देहरादून वित्त वर्ष 2023 -24 में अपनी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका '**संकल्प**' के 35 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। यह संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिंदी के प्रति प्रेम और कर्त्तव्यनिष्ठा का द्योतक है। यह संस्थान अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान कार्यों के साथ-साथ राजभाषा नीति, नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस पत्रिका में लेखों व रचनाओं के माध्यम से संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मकता एवं भावों तथा विचारों को हिन्दी में अभिव्यक्त किया है। संकल्प पत्रिका के इस अंक में साहित्यिक लेखों, कविताओं, राजभाषा वार्षिक प्रतिवेदन 2023, संस्थान में वर्ष 2023 के दौरान नियुक्तियों, पदोन्नतियों, स्थानान्तरण संबंधी जानकारियों के साथ-साथ संस्थान की विभिन्न गतिविधियों यथा डीआरडीओ दिवस, गणतंत्र एवं स्वतंत्रता दिवस, वार्षिक खेलकूद, प्रौद्योगिकी दिवस, विश्वकर्मा पूजन, हिन्दी दिवस, हिन्दी प्रतियोगिताओं तथा हिन्दी पखवाड़ा और संस्थान में अतिविशिष्ट अधिकारियों के परिभ्रमण आदि के परिदृश्यों का समावेश करके पत्रिका को आकर्षक एवं पठनीय बनाने का सार्थक प्रयास किया गया है ।

मैं संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका '**संकल्प**' अंक -35 वर्ष 2023-24 के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

दिनांक: 19 जनवरी, 2024

(पुनीत वाशिष्ठ)
वैज्ञानिक 'जी'

संपादकीय

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.), देहरादून तीनों सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी यंत्रीकरण के क्षेत्र में अनुसंधान, अभिकल्पन एवं विकास संबंधी महत्वपूर्ण कार्य करते हुए राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इसके साथ–साथ यह संस्थान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व का निर्वहन भी पूर्ण निष्ठा और तत्परता के साथ कर रहा है।

यह गर्व का विषय है कि इस संस्थान द्वारा इस वर्ष अपनी वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' के अंक–35 वर्ष 2023–24 का प्रकाशन किया जा रहा है राजभाषा हिन्दी सूचनाओं एवं जानकारियों के आदान–प्रदान हेतु भाषायी सेतु का निर्माण करती है। शासकीय प्रयोजनों में अधिक से अधिक हिन्दी के प्रयोग से ही हिन्दी की राजभाषा की उपाधि सार्थक होगी। 'संकल्प' पत्रिका के इस अंक में संकलित 'हिन्दी भाषा की वैश्विक भूमिका और भविष्य' जैसे लेख और विभिन्न विषयों को उजागर करती कविताएं, संस्थान की वार्षिक गतिविधियाँ का छायांकन, वार्षिक प्रतिवेदन तथा अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां सुधी पाठकों तक सरल व सुबोध भाषा में पहुँचेंगी तथा इससे हमारे संस्थान की कार्य संस्कृति की सुगन्ध पाठकों के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक पहुँचेगी। संकल्प पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा रचनाओं से पाठकगण लाभान्वित होंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

पत्रिका को अपेक्षाओं के अनुरूप मूर्तरूप प्रदान करने में संलग्न सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण, संपादक मण्डल, सभी लेखक एवं रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं।

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक 35 वर्ष 2023–24 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

दिनांक 18 जनवरी 2024

(डॉ. ललित मोहन पन्त)
वैज्ञानिक–एफ, समूह निदेशक राजभाषा
उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा अधिकारी की कलम से....

उत्तराखण्ड के पर्वतांचलों निस्सृत पावन गंगा और यमुना के मध्य द्रोण नगरी देव भूमि एवं तपोभूमि के नाम से प्रसिद्ध देहरादून में स्थित यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.) ने जहाँ एक ओर प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में तीनों सेनाओं के उपयोगार्थ महत्वूपर्ण अनुसंधान तथा विकास कार्यों को सम्पन्न किया है वहीं दूसरी ओर संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। इस संदर्भ में हिन्दी गृह पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन हिन्दी के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम है।

मुझे गर्व एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान, देहरादून द्वारा इस वर्ष अपनी वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक 35 वर्ष 2023–24 का प्रकाशन किया जा रहा है। यह इस बात का परिचायक भी है कि यह संस्थान अपने कार्यालय में केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से प्रयोगशाला के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मकता एवं भावों तथा विचारों को हिन्दी में अभिव्यक्त किया है। संकल्प पत्रिका के इस अंक में साहित्यिक लेखों, कविताओं, राजभाषा वार्षिक प्रतिवेदन, संस्थान में वर्ष 2023 के दौरान नियुक्तियों, पदोन्नतियों, स्थानान्तरण संबंधी जानकारियों के साथ–साथ संस्थान की विभिन्न गतिविधियों यथा डीआरडीओ दिवस, गणतंत्र एवं स्वतंत्रता दिवस, वार्षिक खेलकूद, प्रौद्योगिकी दिवस, विश्वकर्मा पूजन, हिन्दी दिवस, हिन्दी प्रतियोगिताओं तथा हिन्दी पखवाड़ा और संस्थान में अतिविशिष्ट अधिकारियों के परिभ्रमण आदि के परिदृश्यों को समावेश करके पत्रिका को आकर्षक एवं पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका को और अधिक पठनीय एवं आकर्षक बनाने के लिये पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

मैं संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना करते हुए वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक 35 वर्ष 2023–24 के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

दिनांक 18 जनवरी 2024

(कृष्ण मुरारी)
तकनीकी अधिकारी –सी
नामित राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख राजभाषा

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
• हिंदी भाषा की वैश्विक भूमिका और भविष्य	त्रिलोक सिंह	11
• विकास की अभिव्यक्ति	राकेश मोहन	14
• वाहन में ईंधन की खपत को कम करने के उपाय	मुकेश कनौजिया	17
• अमृत काल में राजभाषा हिन्दी की भूमिका	आर्निका सोनी	19
• विश्व स्तर पर अन्य प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान	कृष्ण मुरारी	21
• प्यारी सखियाँ	रुचि उपाध्याय	23
• संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2023	त्रिलोक सिंह	24
• डीआरडीओ वंदन	शशांक जोशी	29
• ख्वाबों की एक्सपायरी	अरविन्द बंसल	29
• अकेला	वन्दना राय	30
• भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें	उर्मिला	31
• आदमी और कुत्ता	पवन कुमार सूरज	32
• एक पल	सुन्दर सिंह धोनी	33
• मेरा सीमा प्रहरी	रामकिशन बड़थ्वाल	33
• हिन्दी का करो सम्मान	मधुसूदन उपाध्याय	34
• चले चाँद की ओर	रक्षिता उपाध्याय,	35
• सामान्य ज्ञान	राघव उपाध्याय	35
• हिन्दी	आर्निका सोनी	36
• जिन्दगी	पूर्णिमा गर्ग	36
• इंद्रिय ग्राह्यता	संदीप नायक	37
• मशीनी अनुवादः तकनीकी प्रयोग और विश्लेषण	प्रकाश नीरव	38
• भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द बनाना है	पवन कुमार सूरज	43
• पुरस्कार सूचीः वर्ष 2023 –24	त्रिलोक सिंह	44
• 'संकल्प' पत्रिका अंक 34 – वर्ष 2022–23 तथा तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक 2, वर्ष 2022–23		47
• संस्थान में नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ, स्थानान्तरण, सेवानिवृत्तियाँ–वर्ष 2023	त्रिलोक सिंह	48
• माँ	राकेश मोहन रावत	51
• हमारा आईआरडीई संस्थान	अनुराधा शर्मा	52
• संस्थान में वर्ष 2023 के दौरान अति विशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण	त्रिलोक सिंह	53
• डॉ. बि.के. दास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, ई.सी.एस. डी.आर.सी. कमेटी के साथ दि. 03.11.2023	.....	55
• संस्थान में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन – वर्ष 2023	.....	56
• संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन : 14–28 सितम्बर, 2023	.....	57
• संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह : 28 सितम्बर, 2023	.....	59
• संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन – वर्ष 2023	.....	60
• संस्थान के स्थापना दिवस एवं वार्षिक खेलकूद के परिदृश्य – 2023	.....	61
• संस्थान की गतिविधियाँ – वर्ष 2023	.....	64
• सेवानिवृत्तियाँ – वर्ष 2023	.....	65
• हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह – वर्ष 2023	.....	65

हिंदी भाषा की वैश्विक भूमिका और भविष्य

त्रिलोक सिंह

सारांश – आज वर्तमान समय में पूरा विश्व वैश्वीकरण के कारण एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है । वैश्वीकरण के युग में जहाँ वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का प्रचार व प्रसार हो रहा है वहीं हिंदी भाषा की भी वर्तमान समय में प्रबल प्रासंगिकता बनी हुई है क्योंकि भारत विश्व में एक विशाल जनसंख्या वाला देश है और यहाँ की अधिकतर जनता हिंदी भाषा का उपयोग करती है । भले ही आज वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव है । परन्तु हिंदी भाषा का भी विश्व में अपना महत्व है । आज हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी वैश्विक स्तर के सम्मेलनों में जाते हैं तो वे अपनी बात हिंदी भाषा में रखते हैं । चाहे वह अमेरिका में गये हों या चीन में, वे अपनी बात हमेशा हिंदी भाषा में ही रखते हैं । जोकि हिंदी भाषा के लिए गर्व की बात है कि उसका वैश्विक स्तर पर प्रचार व प्रसार हो रहा है। इसके साथ ही आज वैश्वीकरण के युग में जिस तरह से भारत प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है, इससे भविष्य में उम्मीद की जा रही है कि निश्चित रूप से हिंदी भाषा का भी वैश्विक स्तर पर प्रचार – प्रसार और प्रयोग बढ़ेगा । मीडिया का इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है । इसलिए वैश्वीकरण के युग में वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का प्रचार व प्रसार भारत के लिए बड़े गर्व की बात है । इससे आने वाले समय में उम्मीद ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हिंदी भाषा का विश्व में अपना वर्चस्व और एक प्रतिष्ठित स्थान होगा ।

1.परिचयः

हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी भविष्य की विश्वभाषा है क्योंकि विश्व के 150 से अधिक देशों में लगभग दो करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीयों द्वारा यह बोली जाती है । इसके अलावा 40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में पढ़ाई जाती है । एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मंदारिन है तो दूसरा स्थान हिंदी भाषा का है । हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए प्रवासी भारतीय एवं प्रवासी हिंदी साहित्य का बहुत बड़ा हाथ है। एक अध्ययन के अनुसार विश्व में चीनी भाषाई आंकड़े प्रस्तुत किये थे ।

उनमें चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय तथा अंग्रेजी को तृतीय स्थान प्राप्त है, क्योंकि हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं है । हिंदी है प्रत्येक हिंदुस्तान का गर्व, हिंदी है प्रत्येक हिंदुस्तानी की पहचान। इसलिए हिंदी भाषा वैश्वीकरण के युग में अपनी एक अलग पहचान बनाने की और अग्रसर है।

2. वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा व भविष्य में हिंदी भाषा का विस्तारः

वास्तव में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति व भारतीय साहित्य जितना अधिक प्रचारित–प्रसारित है । यह जितना वृहद्, अनूठा व विविध है उतना किसी और देश का संभव हो ही नहीं सकता । हमारे भारतीय साहित्य में जितने वेद, पुराण श्रुतियाँ, स्मृतियाँ, महाकाव्य आदि की उपलब्धता है वह किसी अन्य सभ्यता के पास हो, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

अभी हमने सिर्फ साहित्य की बात इसलिए की है क्योंकि साहित्य की वैश्विक स्तर पर उपलब्धता प्राप्त करने का एक महान सेतु बनी है हिंदी क्योंकि इसी साहित्य को पाठक वृंद की पहुँच एवं समझ तक सरलता से बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है । वैसे हिंदी साहित्य में भी ना तो ग्रंथों की कमी है और ना ही विविधता की । प्रत्येक विषय पर जैसे राजनीति, अर्थ, काम आदि पर भाषा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है । हिंदी साहित्य के इतिहास का वर्गीकरण ही इन्हीं भाव पक्षों की प्रधानता को लेकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा किया गया है जैसे वीरगाथाकाल, रीतिकाल, भक्तिकाल आदि ।

3. वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का विकासः

बहुत सरल,सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं । यह हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है ।

आज भारत में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के हैं । इसका आशय यही है कि पढ़ा–लिखा वर्ग भी हिंदी के महत्व को समझ रहा है । जहाँ तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग का प्रश्न है तो यह देखने में आया है कि हमारे देश के नेताओं ने समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है । यह भी सर्वविदित है कि यूनेस्को के बहुत सारे कार्य हिंदी में सम्पन्न होते हैं ।

हिंदी को वैश्विक संदर्भ और ख्याति प्रदान करने में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा विदेशों में स्थापित भारतीय विद्यापीठों की केन्द्रीय भूमिका रही है, जो विश्व के अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रों में फैली हुई है । देश में भी चिकित्सा जैसे क्षेत्र में कई राज्यों में उच्च स्तरीय शिक्षा का अध्ययन–अध्यापन का कार्य हिंदी में किया जा रहा है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध स्तर पर हिंदी अध्ययन–अध्यापन का सर्वाधिक लाभ आम जनमानस को मिल रहा है । जो कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी महत्त्वपूर्ण है ।

4. मीडिया और इन्टरनेट पर हिंदी भाषाः

विश्व में लिखित,मौखिक, दृश्य और श्रव्य रूप में मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रयोग विस्तृत रूप से किया जा रहा है, जो कि भाषायिक वैश्वीकरण का सशक्त माध्यम है। इंटरनेट पर हिंदी भाषा के प्रयोग से विश्व भर में हिंदी की पहुँच क्षण भर में होने लगी। देश के किसी भी कोने से ब्लॉग, फेसबुक या व्हाट्सऐप पर हिंदी में लिखी–बोली गई बात पल भर में विश्व व्यापी हो जाती है। विश्व के किसी भी देश के किसी भी कोने से उस बात तक इंटरनेट के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। इंटरनेट पर हिंदी की उपलब्धता 'गागर में सागर भरने' जैसा है। हिंदी भाषा से जुड़ी हर एक जानकारी इंटरनेट पर मिल जाती है।

यह सत्य है कि हिंदी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकों का अभाव है । उसमें ज्ञान–विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्च–स्तरीय सामग्री की आवश्यकता है । विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं । अभी हाल ही में महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया । हिंदी की वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चेनलों, विज्ञापनों एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है । हिंदी जनसंचार–माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा

बनकर निखरी है ।

5. हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर लाने में चुनौतियाँ:

आज के युग में वैश्विकरण हर स्तर पर आवश्यक है । मानव संवेदनशील प्राणी है और साहित्य एक ऐसा साधन है जो मानवीय संवेदना को पठन–पाठन, श्रवण एवं लेखन के द्वारा आलंबन प्रदान करता है । इस पर भी हिंदी साहित्य की तो बात ही कुछ और है ।

इसकी अनेक विधाएं जैसे कहानी, आलेख, संस्मरण, नाटक, रिपोतार्ज, एकांकी आदि सबकी अपनी विशिष्टताएं हैं ।

आज जबकि हर जगह नई तकनीक का ही बोल बाला है ऐसे वातावरण में हिंदी ने भी कोमलता और सौम्यता के साथ अपना स्थान लेना आरंभ कर दिया है । कंप्यूटर, मोबाईल फोन में भी हिंदी टाइपिंग, गूगल हिंदी टूल्स आदि ऐप्स उपलब्ध हैं जो वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी को वर्तमान युग की भाषा बनाते हैं । भारत सरकार राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कार्यालयों में उपयोग हेतु ई–ऑफिस का निर्माण तथा विकास एक महत्त्वपूर्ण तथा सराहनीय कदम है। आज हिंदी प्रेमी युवा भी हिंदी में न केवल संदेश भेजते हैं अपितु हिंदी में ही मोबाइल पर कार्य भी करते हैं । वैश्वीकरण के पर्याय में आने–जाने वाले गूगल पर हिंदी उपलब्ध है । यानी हिंदी वैश्वीक श्रेष्ठता प्राप्त करने की ओर अग्रसर है ।

6. हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर वैश्वीकरण एवं भविष्य:

हिंदी की गरिमा अतुलनीय है । हमारी हिंदी चाहे वह प्रवासी हो या अप्रवासी, हिंदी केवल हिंदी है । यह अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है क्योंकि वैश्वीकरण को भावनात्मक स्तर पर जागरूक करना आज प्रत्येक हिंदुस्तानी का लक्ष्य होना चाहिए । हिंदी के लिए हमारे विचार, हमारी संवेदनाएं, हमारी निष्ठा, हमारी परम्पराएं, हमारे रीति–रिवाज, हमारी संस्कृति, हमारी विरासत, हमारा धर्म, हमारी नैतिकता, हमारी सामाजिकता, हमारी भावनाएँ,हमारी राष्ट्र भक्ति आदि सब कुछ हिंदी से जुड़ी है । हिंदी निरंतर ही प्रगतिशील रही है । वैश्वीकरण को प्राप्त करने के लिए हिंदी अत्यावश्यक है । प्रवासी स्तर पर भी हिंदी की यही भूमिका है । यह इन सभी संप्रत्ययों का प्रचार–प्रसार हर स्तर पर करती रही है, और आगे भी करती रहेगी । अब आवश्यकता है हिंदी को अत्याधिक प्रचारित–प्रसारित, पुष्पित–पल्लवित करने के लिए सहयोग प्रदान करने की । तभी हम वैश्विकरण की इस चुनौती को स्वीकार कर सकेंगे तथा अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे ।

7.निष्कर्ष:

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, यह अपने देश की संस्कृति की संवाहिका रूपी आत्मा होती है । इसलिए हम सब भारतवासी साहित्य (चाहे व प्रवासी हो या अप्रवासी) से संबंधित वैश्वीकरण की चुनौती को सहर्ष स्वीकार करें एवं अपने नैतिक कर्त्तव्यों, संवैधानिक दायित्वों का हृदय से निर्वहन करते हुए यथासंभव सार्थक प्रयत्नों के द्वारा वैश्विकरण के वर्तमान युग में हिंदी को सफलता के शिखर तक पहुँचाने का प्रयास करें । अपनी मातृभूमि के प्रति, अपनी मातृभाषा के प्रति, वैश्विक स्तर पर देदीप्यमान हिंदी के प्रति, यही हमारी सच्ची निष्ठा का परिचायक होगा।

विकास की अभिव्यक्ति

राकेश मोहन

यूँ ही तो नहीं पंछियों ने शोर मचाया होगा।
कोई तो जरुर शहर से इस तरफ आया होगा।।

कैफे आजमी

कैफे आजमी की ये पंक्तियाँ अपने आप में बहुत कुछ बयान कर रहीं है शहर ही शायद विकास की अभिव्यक्ति है और जैसे–जैसे शहर पनपने लगें तो यह जंगल और गाँवों को खाने लगे और शहर दिन–प्रतिदिन स्थूल होते गये। विकास की कीमत धरती का पर्यावरण है तो ये विकास बहुत ही मंहगा है विज्ञान की ताकत का बेजा इस्तेमाल को विकास का नाम देना हरगिज सही नहीं वरना विज्ञान ने पर्यावरण को संवारने के भी कई रास्ते खोले है अगर विज्ञान हमें एक ऐसी सामग्री देता है जिसका उपयोग विस्फोटक बनाने में इस्तेमाल हो तो वहीं बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में भी इस्तेमाल का रास्ता देता है वो तो हमारे इरादे उस सामग्री के उपयोग करने के तरीके से जाहिर हो जायेगें कि हम पर्यावरण को ले कर कितने संजीदा है।

संतुलित पर्यावरण हमारी पृथ्वी के दीर्घ जीवन का एक मात्र साधन है प्रकृति ने पृथ्वी पर सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवन से लेकर स्थूल आकार के जीवों को उनके जीवन–यापन के लिये समस्त सुविधाये प्रदान की हैं और पृथ्वी पर रहने वाले हर जीव का इस पृथ्वी के संतुलित पर्यावरण में महत्वपूर्ण योगदान है सिवाय मानव रुपी जीव के। असंतुलित होते पर्यावरण का ही कारण है कि विश्व में कई जीवो की प्रजाति पूर्ण रुप से विलुप्त हो चुकी है या विलुप्त हाने के कगार पर है ठीक यही समस्या विलुप्त होती कई प्रकार की वनस्पतियों के साथ भी है लेकिन जीवों में मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ है और मानव अपने जीवन को श्रेष्ठता की पराकाष्ठा पर ले जाने को प्रकृति के समूल संतुलन का दलन करने पर तुला हुआ है। विज्ञान से विकास की परिभाषा लिखने वाले अनायास ही न जाने कितनी सीमाओं की वर्जना भंग कर चुके है जिसकी भारी कीमत धरती आज भी चुका रही है ऐसा नहीं है कि प्रकृति और पर्यावरण को संरक्षित रखते हुये हम मानव जाति के विकास को गति नही दे सकते अब भी वक्त है उस क्षय को रोकने का जो संतुलित पर्यावरण का हर क्षण हो रहा है और एक दिन यही क्षय मानव जाति के सम्पूर्ण विनाश का कारण होगा।

केदारनाथ जैसी त्रासदी इस का एक छोटा सा उदाहरण भर है। शासकों और प्रशासन को प्रकृति को, पर्यावरण को समझाना होगा ऐसी ही नासमझी के अनेकों उदाहरण हैं जिनमें से कुछ का यहाँ वर्णन करने जा रहा हूँ।

प्रथम घटना

फूलों की घाटी उत्तराखण्ड का एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हैं हजारों लोग हर वर्ष फूलों की घाटी को देखने जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व जुलाई के माह में ये घाटी फूलों से भरी रहा करती थी स्थानीय किसान व चरावाहे अपनी गायें व बकरियों को इस क्षेत्र में चरने को छोडा करते थे प्रशासन के कुछ बुद्धिजीवियों को लगा कि ये मवेशी फूलों को नुकसान पहुँचा रहें हैं सरकार द्वारा इस घाटी में मवेशियों को प्रतिबंधित कर दिया गया स्थानीय चरावाहों को इस क्षेत्र में जाने पर रोक लगा दी गई परन्तु इसका परिणाम विपरीत ही हुआ दस किलोमीटर की घाटी जो कभी फूलों से भरी होती थी फूलों से वीरान हो गई इस प्राकृतिक बदलाव का कारण आश्चर्यजनक था दरअसल वो मवेशी ही थे जो फूलो के बीजों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थें मवेशी जिन फूलों को खातें थे उन फूलों के बीज भी पहाडों की उन ऊँचाइयों तक उन मवेशियों के मल द्वारा रोपित हो जाते थें जहाँ उनका रोपण असम्भव था और सरकार के वन विभाग के इस निर्णय से वो कडी टूट गई जिससे उन फूलों का रोपण सम्पूर्ण घाटी में होना रुक गया और वहाँ फूलों का खिलना लगभग समाप्त हो गया। यह एक अकेला उदाहरण ही नहीं है ऐसे सैकडों उदाहरण है जहाँ सरकारों के अनर्गल निर्णयों ने पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाया है इसी तरह जल संरक्षण की कोई भी ठोस नीति सरकारों ने नहीं लागू करी ये देखा गया है

पिछले दो दशकों में प्राकृतिक जल श्रोतों की संख्या घटती चली गई।

दूसरी घटना

यह घटना चीन की है काफी समय पहले चीन ने एक सरकारी आदेश जारी किया कि जिन क्षेत्रों में किसान खेती करते है वहाँ पक्षियों को मारने की छूट दी जाती है क्योंकि ये पक्षी फसल के दानों को खा जाते हैं जिससें किसानों को बहुत नुकसान होता है अब ये छूट मिलते ही पक्षियों का बडी संख्या में शिकार किया जाने लगा परिणाम ये हुआ कि आने वाली फसल के नुकसान के मुकाबले पिछली फसल का नुकसान तो कुछ भी नहीं था बिल्कुल ना के बराबर कारण बेहद ही आश्चर्जनक था क्योंकि इस बार की पूरी फसल कीडों ने चौपट कर दी थी ऐसा नही कि कीडे इस वर्ष ही लगे थे फसलों में परंतु इस बार उन कीडों को खाने के लिये उन क्षेत्रों में पछीं नहीं रह गयें थे पर्यावरण को ले कर कुछ भी करने से पहले परिणाम पर विचार करना बेहद आवश्यक है।

आकडों के मुताबिक भूटान खुशी के इंडेक्स में दुनिया भर में दूसरे स्थान पर है और भूटान में आज भी प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण इस सम्पूर्ण धरती पर सबसे ज्यादा संरक्षित है। भूटान अपनी परम्पराओं व सामाजिक तानेबाने के साथ पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखने की सभी चुनौतियों पर खरा उतरा है वहीं अमेरिका और रूस जैसे देशों ने अपने घातक हथियारों के परिक्षण के चलते साईबेरिया के पर्यावरण को लगभग समाप्त कर दिया है मेगा टनों के हथियारों के परीक्षण के नाम पर हर वर्ष साईबेरिया की धरती कराह उठती है और अब मानव के लोभ की नजरे अंटार्कटिका पर गडने लगी हैं।

बढती जनसंख्या के नाम पर फैलते शहर और विकास और तरक्की के नाम पर कटते जंगलो की चीखें सुननें वाला कोई नहीं है सवेदनहीनता की पराकाष्ठा पर बैठा मानव आने वाले भविष्य से अनजान तो नही पर बेपरवाह जरुर हैं। पिछले तीस वर्षो में दुनिया के चालीस प्रतिशत वन काटे जा चुके है नये पनपते अथवा मानव द्वारा रोपित व पलित जंगल इन कटे हुये जंगलो की भरपाई मात्र सात प्रतिशत ही कर पायेंगे अर्थात कुल सैंतीस प्रतिशत का नुकसान। जिस हिसाब से मानव संख्या बढ रही है एक अनुमान के मुताबिक 2050 तक पूरे विश्व की जनसंख्या नौ अरब होगी अर्थात आज उपलब्ध आक्सीजन की 50% और ज्यादा आवश्यकता और यही हाल जल का भी होगा। मध्य अफ्रीकी देशों में पानी की समस्या दिन प्रति दिन विकट होती जा रही है एशिया के भी देश इन्ही समस्याओं से जूझ रहें हैं फिर भी अरबो क्यूबिक फीट पानी ग्लेशियरों से नदियों से और अन्य प्राकृतिक श्रोतों से सागर में जा मिलता है और दूसरी तरफ महानगरों की जल आवश्यकता हेतु धरती के भीतर एकत्र जल को निकाल कर उस जल स्तर को दिन प्रति दिन रसातल में पहुँचा रहे हैं। हमारे आसपास हर शहर में हमनें इन प्राकृतिक बदलावों को देखा है और देख रहें है मानव ये मान बैठा है कि इस धरती पर सिर्फ मानवों का ही अधिकार है दूसरे जीवों का नहीं ये एक बहुत बडे भ्रम की स्थिति है। अन्न की पैदावार बढानें के लिये हमारे ही देश में एक वर्ष में तीन फसले उगाने के प्रयास में रासायनिक खादों का जरुरत से ज्यादा उपयोग कर जमीनों की उर्वरा शक्ति में गुणात्मक क्षय हो चुका है आज वह मिट्टी वर्ष में दो फसले भी देने योग्य न रहीं अत्याधिक कीटनाशकों का प्रयोग स्वास्थ्य के लिये बेहद घातक होता जा रहा है विभिन्न प्रकार के ट्यूमर कैंसर विकराल रुप लेने लगे है पशुओं को खिलाये जाने वाले चारे को यूरिया खाद डाल कर जल्दी से जल्दी पल्लवित किया जा रहा है और यह यूरिया गाय व भैसों के दूध से होता हुआ हमारे रक्त और किडनी में प्रवाहित हो रहा है।

नदियां औद्योगिक कचरे को बहाने का साधन बन चुकी हैं शायद ही कोई नदी ऐसी हो जिसका पानी पीने योग्य रह गया हो। रासायनिक हथियारों की दौड ऐसे लगी है मानों कोई पिछडना नहीं चाहता कोरोना जैसी महामारी में दुनिया भर की तकनीके धरी की धरी रह गई और सबसे ज्यादा विकसित देशों ने ही जानमाल का नुकसान उठाया अभी भी यदि मानव चेतना सुप्त रही तो पर्यावरण का संतुलन इस सीमा तक बिगड जायेगा कि पूरी मानव जाति के अस्तित्व पर संकट आ जायेगा।

विश्व भर के देश पर्यावरण की बिगडती स्थिति से अवगत है जिस पर विचार करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते हैं परंतु कोई ठोस समाधान नही निकलता क्योंकि सभी देशों के अपने अपने व्यक्तिगत हित होते हैं। ग्रीन गैसों के उत्सर्जन को लेकर भी कोई स्पष्ट नीति नहीं बन पाई दूसरा अधिक भौतिकवाद भी पृथ्वी के पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है। पर्यावरण की सुरक्षा एंव पल्लवन के लिये सबसे सटीक माडल भूटान है। पर्यावरण की निरर्भता हमारे सामाजिक ढाँचे, जनसंख्या विस्फोट, हमारे विकास माडल, हमारी शिक्षा नीति पर निर्भर करता है। हम किस समाज को अपनाते हैं हमारे समाज की

परम्परायें प्रकृति को कितना महत्वपूर्ण मानती है, उदाहरण के लिये क्या हमारा समाज पेडों को नदियों को एक जीवन के रुप में अपनाता है कि नहीं, क्या वन्य जीवों के लियें हमारे समाज में एक दया का भाव है? हमारा समाज भैतिकतावाद को कितना महत्व देता है? क्या हमारा समाज अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने की शिक्षा देता है? हमारा समाज पर्यावरण संतुलन पर कितना गम्भीरता से चिंतन करता है।

दुनिया का हर देश विकास की एक अंधी दौड में शामिल है सभी देशों का अपना सकल धरेलू उत्पाद को बढाना है, औद्योगिकरण करना है, निर्यात बढाना है, चौडी सडकें, रेल पटरियों के जाल, बुलेट रेल, अतिगतिशील वाहन, आसमान छूती इमारतें, बडे–बडे बंदरगाह, हजारों हवाई अड्डे इस विकास की कीमत को पर्यावरण संतुलन बिगाड कर चुकाना पडता है। उदाहरण के लिये सडको के चौडीकरण, रेल की पटरियों और बढते शहर की सीमायें जंगलो पर कहर बन कर टूटती है और उन जंगलों में रहने वाले हजारों कीट पतंगों से लेकर बडे–बडे जानवरों तक की सामाजिक व्यवस्था उनका आवास सब कुछ भस्म हो जाता है। जितना अधिकार पृथ्वी पर इंसानों का है उतना ही एक छोटे से छोटे कीट पतंगों का भी और पर्यावरण के संरक्षण में उनकी भी भागीदारी है। हम आज समय के उस हिस्से में हैं जहाँ हमने हजारों कीट पतंगों से ले कर कई जानवर व पक्षियों की प्रजातिओं को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है यहाँ तक की हमने वनस्पतियों की भी कई प्रजातियॉ पूर्ण रुप से नष्ट कर दी है ऐसा नही की पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुये हम विकास नहीं कर सकते पर मानव ने हर विकास में सिर्फ अपनी सहूलियत देखी पर्यावरण नहीं रूस जैसे देश ने अपने हथियारों के परीक्षण के लियें साईबेरिया में लाखों टन के विस्फोट किये जिसके परिणाम स्वरुप वहाँ की कई हजार टन बर्फ के ग्लेशियर पिघल गये। आने वाला समय बतायेगा कि इसका वहाँ के पर्यावरण पर कितना गहरा असर पडा। परमाणु हथियारों के परिक्षण के लिये कितने ही देशें ने धरती के गर्भ में लाखों टन के विस्फोट किये और इस सब की कीमत आज नहीं तो कल चुकानी ही होगी और अब इसके संकेत मिलने लगे हैं।

समाधान

शिक्षा और जागरुकता ही एक मात्र राह बची है कि हम धरती के पर्यावरण को बहुत ही गम्भीरता से ले आने वाली पीढी के पाठ्यक्रमों में एक अनिवार्य विषय के रुप में पर्यावरण को शामिल करें। जनसंख्या विस्फोट पर जितना जल्दी हो सके लगाम लगाई जाये। हर देश को ग्रीन गैसों के उत्सर्जन की जवाबदेही तय की जाये। बिना किसी भेदभाव के किसी भी सरकारी बडी परियोजना से पहले पर्यावरणविदों से अनुमति अनिवार्य की जाए। बडे–बडे हथियारों के परीक्षणों पर पूर्ण रुप से और सख्ती से पाबंदी लगाई जाये। किसी भी विकास कार्यक्रम या परियोजना पर पर्यावरण के संतुलन का आंकलन अनिवार्य किया जाए। पर्यावरण को होने वाले नुकसान की भरपाई किसी भी कीमत पर की जाए। धरती के किसी भी क्षेत्र पर वृक्षारोपण व पल्लवन के अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाये जायें जिसके लिये धन की व्यवस्था वह संस्थान करे जो अपने उद्योग से ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन कर रहें हैं और उस देश की सरकारें जिन देशों का कार्बन उत्सर्जन अन्य देशों की तुलना में अधिक है। पहाडों पर बाँझ के वृक्षों का रोपण किया जाय यह वृक्ष हवा से नमी ले कर धरती पर जल संचय करतें है बाँझ के वृक्षों के जंगल प्राकृतिक जल श्रोतों का एक बहुत बडा कारण हैं। हर देश के गाँवों का विकास इस तरह से होना चाहिये कि वहाँ की सामाजिक व क्षेत्रीय परम्परायें व पर्यावरण अछूता रहे स छोटे–छोटे जल श्रोतों की संरक्षण नीति बनाई जाये।

पशु–पक्षियों कीट पतंगों वृक्षों वनस्पतियों व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिये एक स्पष्ट अंतर्राष्ट्रीय रणनीति बनाई जाये जिसका कठोरता से पालन किया जाये। पर्यावरण से संबंधित आँकडें पूरे विश्व में साझा किया जायें इस कार्यक्रम में दुनिया भर के विश्वविद्यालयों को भी शामिल किया जाए। रासायनिक हथियारों को रखने वाले व बनाने वाले राष्ट्रों पर कठोर आर्थिक दण्ड का प्रावधान रखा जाये। संयुक्त राष्ट्रसंघ की ही तरह अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन बनाया जाये जिसको आर्थिक दण्ड लगाने का और उसे हासिल करने का अधिकार दिया जाये। यह संगठन इतना शक्तिशाली होना चाहिये कि कोई भी राष्ट्र इस संगठन पर अपना प्रभाव डालनें का दुस्साहस न कर सके।

धरती के पर्यावरण का जो नुकसान हम कर चुके है उसकी भरपाई कर पाना तो असम्भव है परंतु आने वाले समय में होने वाले नुकसान को रोका जा सकता है। मानव सभ्यता को आने वाले खतरे को समझाना होगा धरती ही नहीं बचेगी तो विकास, शक्ति, हथियार, उच्च तकनीक, धन–धान्य का कोई भी मायने नहीं हैं।

वाहन में ईंधन की खपत को कम करने के उपाय

मुकेश कनौजिया

हम सभी जानते हैं की पेट्रोल और डीजल सहित पूरे देश में ईंधन की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं जिसका सीधा प्रभाव हमारे जेब पर पड़ता है और हमें ऐसा लगता है की ईंधन की कीमतों में कमी आये तो हम अपने वाहन को पहले की अपेक्षा निर्धारित ईंधन में अधिक दूरी तय कर सकते है। अब ईंधन की कीमतों को निर्धारित करना हमारे नियंत्रण में तो नही है किन्तु एक उपाय ऐसा है जिस पर शत प्रतिशत हमारा नियंत्रण है और वह यह है की हम अपने वाहन के चालन (ड्राइविंग) की आदतों में सुधार और वाहन के रख–रखाव में कुछ बदलाव करके वाहन में ईंधन की खपत को कम कर सकते है अर्थात अपने वाहन के माइलेज को बढा सकते है आइये जाने यह कैसे संभव है–

टायर प्रेशर– टायर में एयर प्रेशर को PSI यानी पाउंड्स पर स्क्वायर इंच में मापा जाता है यदि टायर में एयर प्रेशर का मान कम या अधिक है तो इसका सीधा प्रभाव हमारे वाहन के माइलेज पर पड़ता है इसलिए अपने वाहन के टायर में एयर प्रेशर की जाँच समय–समय पर अवश्य करवाए कार के टायर में 32–35 PSI एयर प्रेशर को नॉर्मल माना जाता है। आपके वाहन का सही टायर एयर प्रेशर जानने के लिए कार निर्माता कंपनी ने कार के ड्राईवर गेट के लॉक के पास यह दर्शाया हुआ होता है।

एक्सेलरेटर एंव ब्रेक पैडल का उपयोग– सबसे पहले हमें एग्रेसिव ड्राइविंग करने से बचना चाहिए इस प्रकार की ड्राइविंग में एक्सेलरेटर व ब्रेक का बार–बार उपयोग करके वाहन की गति को कभी तेज व धीमा किया जाता है जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से वाहन में फ्यूल की खपत बढ़ जाती है।

प्रायः देखा गया है की ड्राइविंग करते समय चालक के सामने लगभग 200–300 मीटर की दूरी पर रेड लाईट या अन्य किसी कारण से ट्रैफिक जाम दिखता है तो इसके बावजूद भी कुछ लोग अपने वाहन की गति को निरंतर बनाए रखते है और अंतिम समय पर ब्रेक लगाते है जबकी हमें इस स्थिति में पहले से ही गतिमान वाहन के मोमेंटम का उपयोग करना चाहिए और एक्सेलरेट नहीं करना चाहिए जिससे गाडी की गति स्वयं ही धीमी हो जायेगी और आवश्यकता पड़ने पर ब्रेक का उपयोग करना चाहिए इसके साथ ही यदि आप वाहन को हाइवे पर चलाते है तो जहाँ तक संभव हो सके अपने वाहन की गति को एकसमान लगभग 70–80 Kmph के बीच रखना चाहिए या फिर क्रूज कन्ट्रोल का उपयोग करना चाहिए।

क्लच पैडल का उपयोग– आपको यह ज्ञात होना चाहिए की वाहन ड्राइव करते समय क्लच पैडल को सही समय पर

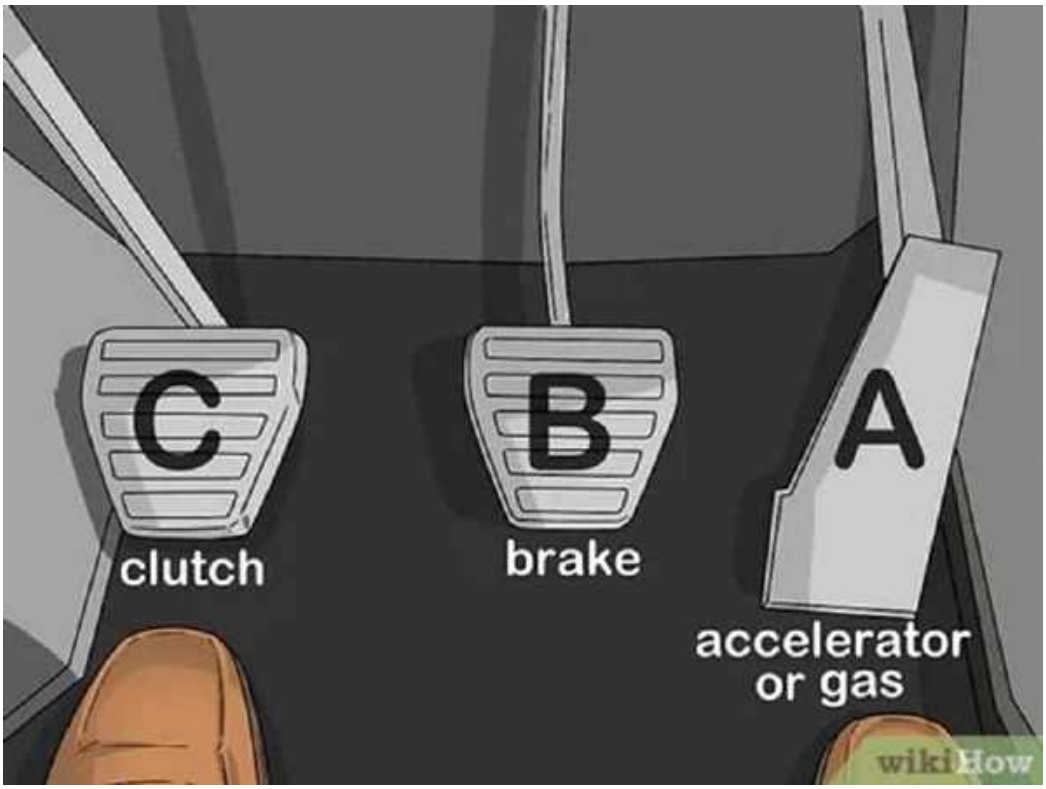

और नियत अंतराल तक दबाये रखना सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि क्लच वाहन का एक सबसे महत्वपूर्ण जरिया होता है जो ईंजन और ट्रांसमिशन गियरबॉक्स के बीच एक कनेक्शन बनाता है। यदि क्लच को बेवजह दबाया या उस पर तनाव पड़ता है तो इससे ईंजन और गियरबॉक्स के साथ–साथ क्लच प्लेट पर भी बुरा असर पड़ता है जिससे फ्यूल की खपत के साथ–साथ क्लच पैडल के खराब होने के आसार बढ़ जाते हैं।

कुछ लोगों को यह करते अक्सर देखा गया है की जब वह ड्राइविंग करते हैं तो वे अपने पैरों को आराम देने के लिए अपना पैर क्लच पैडल पर ही रखे रहते हैं जिससे क्लच पर बेवजह तनाव बना रहता है और कुछ वाहन चालक तो ट्रैफिक सिग्नल के रेड होने पर भी अपने वाहन को स्टार्ट रखते और क्लच दबाये हुए होते हैं जबकि सामान्य तौर पर यदि ट्रैफिक के रेड सिग्नल होने पर आपको 15–20 सेकंड से कम रुकना है तो वाहन को न्यूट्रल करके रखे और यदि अधिक समय लगे तो अपने वाहन के इंजन को बंद करके रखें।

वाहन में अनावश्यक भारी वस्तुओं का होना– प्रायः यह देखा गया है की हम वाहन में अनावश्यक भारी वस्तुओ को ऐसे ही रखा रहने देते हैं और वाहन को ऐसे ही ड्राइव करते रहते है। हमें यह जान लेना चाहिए की वाहन में जितना अधिक वजन होगा उतनी ही अधिक शक्ति ईंजन को वाहन के खिंचाव के लिए लगानी पड़ती है जिससे ईंधन की खपत बढ़ जाती है इसलिए अपने वाहन में अनावश्यक भारी वस्तुओं को न रखें।

इस प्रकार के बताये गए उपायों के अतिरिक्त कुछ और सावधानियाँ हैं जिनका उपयोग करके आप अपने वाहन के ईंधन की बचत के साथ–साथ वाहन के यांत्रिक घटक के जीवन अवधि को बढ़ा सकते हैं।

- आवश्यकता न होने पर वाहन के इंजन को बंद रखे।
- गति के अनुसार गियर को बदलना चाहिए।
- बार–बार क्लच का उपयोग नही करना चाहिए।
- सामान्यता वाहन को 2000 rpm से अधिक पर नही चालाना चाहिए।
- वाहन के एयर फिल्टर को साफ रखना चाहिये।
- सही पेट्रोल पंप का चुनाव करें।
- वाहन को हाइवे पर चलाते समय सभी शीशों को बंद रखना।
- रूट प्लान का इस्तेमाल करें जिससे आप बेवजह ट्रैफिक जाम में फसने से बचेगें।
- कम दूरी की ड्राइविंग से बचें।
- तय समय पर वाहन की सर्विसिंग को अधिकृत सर्विस स्टेशन पर ही करवाना चाहिए।

यह निश्चित है की यदि आप इस प्रकार की ड्राइविंग स्किल और सावधानियो का उपयोग करते हैं तो अवश्य ही आप अपने वाहन के ईंधन की बचत करते हैं।

अमृत काल में राजभाषा हिन्दी की भूमिका

आर्निका सोनी

भाषा किसी भी समाज की आधारभूत शिला होती है। ज्यों–ज्यों सभ्यता का विकास होता है, भाषा भी प्रौढ़ और पुष्ट होती जाती है। भारत के संदर्भ में राजभाषा हिन्दी ही वह भाषा है जो भारतीय समाज को जोड़ने, सामाजिक व सांस्कृतिक समरसता स्थापित करने तथा भारतीय विविधतापूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करने में सक्षम है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी हिन्दी नें यह भूमिका बहुत सशक्त ढंग से निभायी थी तथा वर्तमान समय में भी भारतीय समाज को हिन्दी की सशक्त भूमिका की महती आवश्यकता है।

वास्तव में, भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार नें इस उत्सव को एक विशेष रूप से मनाने के लिये "आजादी का अमृत महोत्सव" की घोषणा की तथा आने वाले 25 वर्षों (आजादी के 75 से 100वें वर्ष तक) को 'अमृतकाल' की संज्ञा दी । इस अवधि में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारत सरकार नें अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएँ तैयार की हैं । इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक उभयनिष्ठ भारतीय भाषा का होना नितांत आवश्यक है, जिसके माध्यम से समस्त जनभावनाओं को जोड़ा जा सके । इस कार्य के लिए राजभाषा हिन्दी सर्वोपयुक्त भाषा है।

अमृत कालः एक विवेचनाः 'अमृतकाल' वैदिक ज्योतिष का एक शब्द है, जिसका अर्थ है– किसी भी कार्य को करने का सही समय । यही वह समय है जब बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल की जा सकती है। भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी नें सर्वप्रथम अक्टूबर 2021 में 'अमृतकाल' शब्द का प्रयोग किया था । प्रधानमंत्री नें आने वाले 25 वर्षों, स्वतंत्रता के 75वें वर्ष से 100वें वर्ष तक, को "अमृतकाल" की संज्ञा दी है । 'अमृतकाल' के रूप में वास्तव में भारत सरकार नें स्वर्णिम भारत के स्वप्न को वास्तविकता के धरातल पर लाने का एक रोडमैप तैयार किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में बुनियादी अवसंरचनात्मक विकास (Infrastructural development) को बढ़ावा देना, सामाजिक व आर्थिक विकास को गति देना एवं भारतीय नागरिकों को देश के गौरवशाली इतिहास का बोध कराते हुए भारत को विकसित देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना है जिसके लिए प्रधानमंत्री नें 'पंचप्रण' का आह्वान किया है ।

किंतु इन सभी योजनाओं को सुचारू रूप से संचालित करने तथा देश के अंतिम व्यक्ति तक को इस ध्येय से जोड़ने के लिए पूरे देश में एक उभयनिष्ठ भाषा का होना नितांत आवश्यक है । 15 अगस्त 2022 को लाल किले के प्राचीर से श्री प्रधानमंत्री नें इस बात पर जोर देते हुए कहा था, "भारत में बहुत सारी भाषाएँ हैं । कभी–कभी हमारी प्रतिभाएँ भाषा के बंधनों में बंध कर रह जाती हैं।" अतः भारतीय समाज के लिये एक भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका अति महत्वपूर्ण है ।

वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी: भाषा केवल संचार का माध्यम ही नहीं, अपितु संस्कृति और उन्नति का वाहक भी होती है । भारत के संदर्भ में यह दर्जा राजभाषा हिन्दी को प्राप्त है । आज विश्व भर में हिन्दी बोलने व समझने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है । वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी, विश्व में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है । संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) नें भी अपनी आधिकारिक भाषाओं में हिन्दी को स्थान दिया है । सहज, सरल और सुगम होने के साथ–साथ हिन्दी सम्भवतः विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा भी है ।

भारत में हिन्दी भाषियों की संख्या 53% से अधिक है तथा हिन्दी समझने वालों की संख्या 65% से अधिक है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही 11 राज्यों एवं 3 संघ शासित प्रदेशों की भी प्रमुख भाषा है, जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच सेतु भी है । अतः हिन्दी को भारत के अधिकांश जनमानस की भाषा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

स्वतंत्रता संग्राम के समय भारत के शीर्ष नायकों, जैसे– महात्मा गाँधी, महामना मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय आदि,सहित सभी क्रांतिकारियों नें हिन्दी को ही जनसम्पर्क भाषा के रूप में चुना तथा जन– जन तक हिंदी को स्थापित किया । परिणामस्वरुप हिन्दी नें स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन के रूप में परिणित कर दिया।

डॉ. जगदीश त्यागी नें हिन्दी के संदर्भ में कहा था–

"गूँज उठे भारत की धरती, हिन्दी के जय–गानों से।
पूजित, पोषित, परिवर्धित हो, बालक–वृद्ध–जवानों से॥"

वर्तमान समय में 'अमृतकाल' की अवधारणा नें हिन्दी के महत्व को पुनः रेखांकित किया है ।

अमृत काल में हिन्दी की भूमिका: किसी भी राष्ट्र को मजबूत और दृढ़ बनाने के लिए उस देश में सांस्कृतिक विशिष्टता का होना नितांत आवश्यक है । भाषा इसी सांस्कृतिक विशिष्टता का एक अभिन्न अंग है । भाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देशप्रेम की भावना उत्प्रेरित करती है। 'अमृतकाल' के संदर्भ में राज भाषा हिन्दी की महत्ता उतनी ही है जितनी कि परियोजनाओं की तकनीकी विशिष्टता एवं योजना संचालन की। 'अमृतकाल' के संदर्भ में जितनी भी योजनाएँ बनायी गयी हैं, जो भी रोडमैप तैयार किए गए हैं, उनके क्रियान्वयन एवं समुचित कार्यवहन के लिए यह अति आवश्यक है कि भारतीय जनमानस अपनी सांस्कृतिक व सामाजिक विविधताओं से ऊपर उठकर देश के लिए एकजुट हो तथा हृदय से 'अमृतकाल' की योजनाओं से जुड़े। सरकार को भी अपनी योजनाओं का लाभ निचले स्तर के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए राजभाषा हिन्दी की आवश्यकता है।

साथ ही, हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में एक वृहद् बाजार मिलेगा, जिससे विदेशी निवेश बढ़ने और विदेशी मुद्रा भंडार के समृद्ध होने की अपार सम्भावनाएँ हैं। अतः हिन्दी का योगदान मात्र सामाजिक नहीं अपितु आर्थिक उत्थान के संदर्भ में भी है।

निष्कर्ष: एक भाषा के रूप में हिन्दी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची वाहक, प्रेषक और परिचायक भी है। अमृत काल की प्रस्तावित योजनाओं और स्वर्णिम भारत के निर्माण के लिए जनमानस को एकजुट करने, सामाजिक व सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद सभी को परस्पर सहभागिता के लिए प्रेरित करने तथा राष्ट्रप्रेम की भावना को उत्प्रेरित करने में महत्वपूर्ण व अद्वितीय योगदान देने का दायित्व हिन्दी का ही है । भारतीय समाज में हिन्दी भाषा जितनी अधिक समृद्ध होगी, भारत की एकता और अखण्डता उतनी ही सुदृढ़ होगी तथा भारतीय जनमानस एकीकृत रूप में देश की उन्नति और प्रगति का ध्वजवाहक बन सकेगा ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में–

"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी–भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी॥"

दुनिया में बहुत चीज मिल जाती हैं
बस अपनी गलती छोड़कर।

विश्व स्तर पर अन्य प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान

कृष्ण मुरारी

परिचयः 14 सितम्बर 1949 को हिंदी देश की राजभाषा बनी। तब से हिंदी ने कई उतार–चढ़ाव देखे फिर भी हिंदी देश एवं दुनिया में सतत आगे बढ़ती जा रही है। आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, इसका विस्तार विश्व के लगभग 130 देशों में हो चुका है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ फिजी की भी राजभाषा है तथा मॉरिशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। साथ ही साथ संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटैन, साउथ अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी, सिंगापुर, कनाडा, यू.ए.ई जैसे देशों में भी हिंदी भाषी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। जहाँ विकिपीडिया हिंदी को मंडारीन (चीनी) तथा अंग्रेजी के बाद तृतीय स्थान देता है वहीं शोधकर्ता डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल हिंदी का प्रथम स्थान अपने शोध में सिद्ध कर चुके है। विज्ञान के इस युग में भारत जैसे विशाल देश की राजभाषा के जानकारों की संख्या का सुनिश्चित न होना बड़ी विडंबना है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार, लगभग 25.71 करोड़ भारतीय हिंदी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते हैं, जबकि 2011 के आँकड़ों के अनुसार लगभग 42.20 करोड़ लोग इसकी 50 से अधिक बोलियों में से एक इस्तेमाल करते हैं। मातृभाषा के रूप में हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी (34 करोड़), स्पेनिश (35 करोड़) से ज्यादा है। मंदारिन बोलने वालों की संख्या लगभग 87 करोड़ है परन्तु एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है की जहाँ मंदारिन भाषा समूह की सभी भाषाओं को एकत्रित रूप में गणना की जाती है वहीं हिंदी के साथ ऐसा न कर, हिंदी को राजस्थानी, मारवाड़ी, मैथिलि, अवधी, ब्रजभाषा जैसे टुकड़ों में बांटकर प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार विश्व की दो प्रमुख भाषाओं की गणना के लिए अलग–अलग पैमाने अपनाना न्यायपूर्ण नहीं है।

वर्तमान में विश्व में हिंदी की स्थिति

वर्तमान में विश्व में दैनिक समाचार पत्रों की दृष्टि से प्रथम बीस समाचार पत्रों में हिन्दी के पांच समाचार पत्रों का समावेश है। विश्व में क्रमशः दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं राजस्थान पत्रिका का प्रमुखतः समावेश है ।

दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉस्को (रुस) को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन–अध्यापन के प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। मॉस्को में हिंदी भाषा का अध्ययन और शिक्षण मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय के साथ–साथ दो अन्य विश्वविद्यालयों में भी किया जाता है। मॉस्को विश्वविद्यालय में हिंदी में बी.ए., एम.ए. और पीएच. डी. की जा सकती है। रूस स्थित भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा निःशुल्क पढ़ाई जाती है। मॉस्को में ऐसा विद्यालय भी है जहाँ बच्चों को छठी कक्षा से ही हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। रूसी वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी भाषा के अनेक शब्दकोशों और पाठ्य–पुस्तकों की रचना एवं हिंदी साहित्य का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है। मॉस्को के अलावा रूस के ही सेण्ट–पीटरसबर्ग राजकीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापकों ने तृतीय क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में रूसी छात्रों के लिए हिंदी भाषा की नई पाठ्य–पुस्तक पेशकी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड, येल, शिकागो, वाशिंग्टन, मोन्टाना, टेक्सास एवं कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य विश्वविद्यालयों में भी हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।अमेरिका के अनेक राज्यों के पब्लिक स्कूल्स (सरकारी विद्यालयों) में भी हिंदी भाषा का विकल्प दिया जा रहा है। इसी प्रकार ऑस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय, टोक्यो विश्वविद्यालय, जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय में भी हिंदी के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

पड़ोसी देश चीन के पेकिंग विश्वविद्यालय, गुआंडोंग विश्वविद्यालय सहित अनेक महाविद्यालयों में तथा बीजिंग स्थित गुरुकुल विद्यालय में हिंदी पढ़ायी जाती है। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया तथा सिंगापुर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी हिंदी पढ़ायी जाती है। सुदूर पूर्व के देश फिजी में हिंदी को विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में भी अनेक विदेशी छात्र, जिनमें जापानी, कोरियाई छात्रों की संख्या अधिक है, भारत में स्थित विदेशी कंपनियों में आकर्षक नौकरी हेतु हिंदी में दाखिला ले रहे है।

वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए, भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने, जानने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में 17 सितंबर, 2001 को भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरिशस में की गयी। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के प्रयासों में इस सचिवालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। हिन्दी का एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की गई है। यह सचिवालय अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समाचार का प्रकाशन भी करता है। हिंदी को विश्व पटल पर अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए कुछ और प्रयास करने की आवश्यकता है, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण कदम हिंदी भाषा के अपने विशिष्ट फॉण्ट का सृजन करना जिससे वर्तमान के तकनीकी युग में हिंदी भाषा को नयी पीढ़ी के प्रयोग के लिए सुगम बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त हिंदी में युवा पीढ़ी केंद्रित मौलिक लेखन को बढ़ावा देना, विदेश में स्थित भारतीयों एवं अन्य विदेशी नागरिकों को हिंदी सिखाने की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करना जैसे कदमों का समावेश है।

उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति

किसी भी भाषा के संरक्षण हेतु उस भाषा में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। देश में शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण अब मातृभाषा में शिक्षा की स्थिति कमजोर हो रही है। प्राथमिक शिक्षा में फिर भी हिंदी या मातृभाषा का विकल्प है किन्तु उच्च शिक्षा में तो अंग्रेजी का कोई विकल्प छात्रों के समक्ष दिखाई नहीं देता है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष है कि मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने यह स्वयं स्वीकार किया था कि मेरी विद्यालयीन शिक्षा मातृभाषा में हुई है इसलिए मैं अच्छा वैज्ञानिक बना हूँ।

देश के उच्च शिक्षा तंत्र में लगभग 60 लाख से अधिक छात्र गैर–महानगरीय क्षेत्रों से प्रवेश लेते हैं, वे अंग्रेजी से तालमेल नहीं बैठा पाते। भाषा की इस खाई के परिणाम स्वरूप देश की उच्च शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पा रही है। उच्च शिक्षा के अलग–अलग संकायों का हम विश्लेषण करें तो विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं। उदाहरणार्थ दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय की प्रवेश परीक्षा केवल अंग्रेजी में होती है जबकि वार्षिक परीक्षा में हिंदी अथवा अंग्रेजी में उत्तर देने का प्रावधान है। प्रश्न यह उठता है कि जब प्रवेश परीक्षा केवल अंग्रेजी में है आगे के चरणों में हिंदी के छात्र कैसे पहुंच पाएंगे? इसी प्रकार इस संकाय में शिक्षण का माध्यम केवल अंग्रेजी है, पाठ्य सामग्री (कोर्स मटेरियल) केवल अंग्रेजी में है तो हिंदी का विकल्प औचित्यहीन हो जाता है। देश के सबसे बड़े विधि संस्थान अर्थात् राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों की भी यही परिपाटी है। इसी प्रकार सारे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का शिक्षा का माध्यम मात्र अंग्रेजी है। अधिकतर राज्यों में सामान्य उच्च शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी है।

वैश्विक स्तर पर एवं देश में हिन्दी का विस्तार

वैश्विक स्तर पर एवं देश में भी हिन्दी का विस्तार काफी हो रहा है लेकिन दूसरी ओर विद्यालय से लेकर उच्चतम शिक्षा के स्तर पर हिन्दी एवं अन्य भाषाएँ सिकुड़ती जा रही है। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषायी माध्यम के विद्यालयों में छात्रों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। वास्तव में देश एवं दुनिया के भाषा सम्बंधित सारे अध्ययनों का निष्कर्ष यहीं है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। महात्मा गाँधी जी ने भी कहा था हमारे बालक अंग्रेजी सीखने के लिए कम से कम ६ साल खर्च कर देते हैं, अगर इस समय का अपने विषय को सीखने में उपयोग करते हैं तो उनका विषय सम्बन्धी ज्ञान में उतनी मात्रा में अधिक उपलब्धि हो सकती है।

इसी प्रकार देश का सारा प्रशासनिक कार्य अधिकतर अंग्रेजी में किया जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं का माध्यम या तो अंग्रेजी है या अंग्रेजी का एक प्रश्नपत्र अनिवार्य किया गया है। इस प्रकार देश के अधिकतर न्यायालयों में आज भी अंग्रेजी में ही कार्य किया जा रहा है। जब तक हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के समक्ष उपस्थित इन चुनौतियों का समाधान नहीं करेंगे तब तक हिंदी और भारतीय भाषाओं का वास्तविक उत्थान संभव नहीं होगा। उपरोक्त चुनौतियों का सामना करने के लिए राजभाषा कानून, मा.राष्ट्रपति जी के विभिन्न आदेशों का कड़ाई से अनुपालन होना चाहिए। इसी के साथ प्राथमिक शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से मातृभाषा होना चाहिए। उच्च शिक्षा के स्तर पर अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध कराना होगा। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विकास हेतु प्रत्येक राज्य में वहां–वहां की भाषा के विश्वविद्यालय स्थापित करना होगा। सभी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी के परिपक्व होते स्थान की तुलना में देश के अंदर हिंदी को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ समय पूर्व कर्नाटक राज्य की राजधानी बेंगलुरू में मेट्रो ट्रैन स्थान कों (स्टेशनों) में सूचना पट्ट पर हिंदी के प्रयोग के विरोध में कुछ राजनैतिक उद्देश्यों से प्रेरित संगठनों ने हिंसक प्रदर्शन करके एक प्रकार से भाषायी विभेद निर्माण कर देश की राजभाषा विरोधी वातावरण को बढ़ावा देने का कार्य किया है। इस सन्दर्भ में हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि हिंदी संवैधानिक रूप

से देश की राजभाषा भी है, जिसका सम्मान करना देश के सभी नागरिकों का कर्त्तव्य बनता है। राज्यों की अपनी राजभाषाएँ है जिनका पूर्ण सम्मान किया जाना चाहिए इसी प्रकार देश की राजभाषा का भी सम्मान किया जाना चाहिए। यह अत्यंत दुःख की बात है कि अपने राजनीतिक स्वार्थ हेतु इस प्रकार के भाषाओं के विवाद खड़े किये जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सारी भारतीय भाषाएँ एक–दूसरे के समर्थन में खड़ी हों। भाषा के माध्यम से देश को तोड़ने नहीं देश को जोड़ने की आवश्यकता है।

प्यारी सखियाँ

रुचि उपाध्याय
पत्नी श्री एम.एस. उपाध्याय

कल सपने में आए कन्हैया,
साथ में ले के राधा मैय्या।
बोले दिल खुश आज है तुझसे,
जो चाहे वो माँग ले मुझसे।
क्या माँगू मैं तुमसे मोहन,
तुमने अपरम्पार दिया है।
बिन माँगे ही तुमनें मुझको,
खुशियों का भण्डार दिया है।
फिर भी गर देना ही है तो,
अपनी सखियों सी सखियाँ दे दो।

एक सखी मिश्री सी मीठी,
जो जीवन में मिठास घोल दे।
दूजी देना चटपटी अचार सी,
बेस्वाद जीवन में, स्वाद डाल दे।
तीसरी सखी मजबूत बरगद सी,
हर मुश्किल में बने सहारा।
चौथी सखी तितली सी दे दो,
इन्द्रधनुष सा रंग दे जीवन सारा।
पाँचवी सखी माँ जैसी देना,
जो ममता और दुलार लुटाए।
जब भी गलती करूँ मैं कोई,
साथ बैठ कर मुझे समझाए।

छठी सखी हो मेरी शान,
हर महफिल में भर दे जान।
सखी सातवीं हो कोयल सी,
सात सुरों से जीवन भर दे।
सखी आठवीं फूलों की डाली,
हर पतझड़ को बहार कर दे।
एक सखी ऐसी भी देना,
जो बिन बोले हर बात समझ ले।
इस पर बोले रमन बिहारी,
समझ गया चतुराई तेरी।
जो माँगा है मिले तुझे सब,
होगी इच्छा पूरी सारी ।
पर एक सखी मैं नीम सी दूँगा,
काम करेगी औषधि का जो।
जब भटके तू सही राह से,
कड़वा सच बतलाएगी वो।

आँख खुली तो मैने पाया,
सपना मेरा सत्य हुआ है।
साथ रहे सब सखियों का,
ईश्वर से बस यही दुआ है।
सुख दुःख बाँटे मिलकर हम सब,
लगें मेले खुशियों के हर दम।
लगे नजर ना किसी की हम को,
प्रेम बढ़े ये हर पल हर क्षण।

संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2023

त्रिलोक सिंह

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून में राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम व निर्देशों के अनुपालन तथा कार्यान्वयन हेतु मुख्यालय – संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, नई दिल्ली के नेतृत्व तथा राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन एवं संस्थान के निदेशक महोदय के संरक्षण में संस्थान के वार्षिक कार्यक्रमानुसार वर्ष 2023 के दौरान राजभाषा नीति,नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है–

1. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन–

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, हिन्दी पत्राचार की समीक्षा और राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के सन्दर्भ में हिन्दी कार्यशालाओं, अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी संयुक्त हिन्दी संगोष्ठी, वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' का प्रकाशन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर हिन्दी में पुस्तक लेखन, हिन्दी प्रतियोगिताओं, हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा तथा हिन्दी प्रशिक्षण तथा संस्थान का राजभाषायी निरीक्षण आदि विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन एवं समीक्षा तथा

हिन्दी पत्राचार की प्रतिशतता को बढ़ाने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रतिवर्ष 04 त्रैमासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं । वर्ष 2023 में दिनांक 15.03.2023, 27.06.2023, 29.09.2023 तथा 26.12.2023 को त्रैमासिक बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों के कार्यवृत्त राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, नई दिल्ली को प्रेषित किये गए। बैठक के कार्यवृत्त पर यथोचित अनुवर्ती कार्रवाई एवं समीक्षा की गई ।इसके साथ ही समय–समय पर संस्थान की प्रबंध परिषद की बैठक में भी संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की जाती है ।

2. वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक –34 तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक –02 का प्रकाशन

संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 18 फरवरी 2023 को संस्थान की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

'संकल्प' के 34वें अंक तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' के द्वितीय अंक का विमोचन निदेशक महोदय द्वारा किया गया। हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक–34 वर्ष 2022–23 तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक–02 वर्ष 2022–23 का ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया गया तथा इनकी 30–30 प्रतियों का मुद्रण भी कराया गया। अध्यक्ष डीआरडीओ, सभी डी.जी., मुख्यालय, डीआरडीओ की 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र स्थित सभी प्रयोगशालाओं को संकल्प अंक 34 तथा संकल्प तकनीकी पत्रिका अंक 2 की ई–पत्रिका का प्रेषण किया गया। राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय नई दिल्ली को मुद्रित प्रतियां भी भेजी गई तथा 08 मुद्रित प्रतियां विमोचन के समय वितरित की गई। संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जानकारी हेतु संकल्प तथा संकल्प तकनीकी ई– पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी को आईआरडीई इन्ट्रानेट के राजभाषा कॉलम पर अपलोड किया गया है ।

वित्त वर्ष 2023 –24 की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक –35 तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक –03 का प्रकाशन किया जायेगा ।

3. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में प्रतिभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति– का.–1 देहरादून की छमाही बैठकें अध्यक्ष न.रा.का.स.–का.–1, भारत के महासर्वेक्षक, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून की अध्यक्षता में दिनांक 28.06.2023 को ऑन लाइन बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में संस्थान के डॉ. एल.एम.पन्त, वैज्ञानिक–एफ, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री त्रिलोक सिंह , डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी तथा प्रकाश नीरव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने भाग लिया। दूसरी छमाही बैठक दिनांक 27.12.2023 को आयोजित की गई जिसमें स्थान के डॉ. एल. एम. पन्त, वैज्ञानिक–एफ, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री कृष्ण मुरारी, त.अ.–सी, नामित राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख तथा श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी प्रभारी अधिकारी राजभाषा ने भाग लिया।

4. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन–

संस्थान के कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी के प्रति अभिरूचि को बढ़ाने और राजभाषा नीति, नियमों की जानकारी देने, हिन्दी टंकण संबंधी समस्याओं के समाधान तथा हिन्दी पत्राचार के विभिन्न स्वरूपों की जानकारी हेतु संस्थान स्तर पर वर्ष भर में विभिन्न विषयों पर निम्नांकित विवरण के अनुसार 04 हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गईं ।

4.1) संस्थान में दिनांक 03.03.2023 को 'राजभाषा कार्यान्वयन हेतु हिन्दी सॉफ्टवेयर तथा यूनिकोड संबंधी जानकारी ' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 02 व्याख्यान प्रस्तुत किये गये तथा यूनिकोड एक्टीवेट करने का अभ्यास कराया गया ।

प्रथम व्याख्यान श्री प्रकाश नीरव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी तथा द्वितीय व्याख्यान श्री अनुज कुमार रुहेला, तकनीकी अधिकारी–ए द्वारा प्रस्तुत किये गये। इस कार्यशाला में 46 प्रतिभागी, 02 वक्ता तथा 09 कार्यदल एवं रा.का.समिति के सदस्यों सहित कुल 57 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को पंजीकरण किट वितरित की गई।

उद्घाटन सत्र में संस्थान के श्री नीरज भार्गव, वै.जी, सह निदेशक, डॉ. ललित मोहन पन्त, वै.एफ उपाध्यक्ष रा. का.स., श्री पंकज श्रीवास्तव, वै.एफ, श्री हितेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी व श्री टी.के. भारद्वाज, वरिष्ठ लेखा अधिकारी सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

4.2) संस्थान में दिनांक 22.06.2023 को वर्ष 2023 की द्वितीय हिन्दी कार्यशाला 'हिन्दी प्रत्राचार, राजभाषा नियमों तथा प्रोत्साहन योजनाओं सम्बन्धी जानकारी' विषय पर आयोजित की गई । इसमें कुल 04 व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। विशिष्ट आमंत्रित वक्ता डॉ. राम विनय सिंह, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून प्रथम

व्याख्यान' हिन्दी में उच्चारण एवं व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का निवारण' विषय पर तथा दूसरा व्याख्यान ' कार्यालयीन पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग' विषय पर प्रस्तुत किया गया।

संस्थान के श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी द्वारा कार्यशाला का तृतीय व्याख्यान 'राजभाषा नियमों तथा निर्देशों की जानकारी' और चतुर्थ व्याख्यान 'हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओं सम्बन्धी जानकारी' विषय पर प्रस्तुत किये गये। इस कार्यशाला में 47 नामित प्रतिभागी, 02 वक्ता तथा 11 कार्यदल एवं रा.का.समिति के सदस्यों ने भाग लिया। सभी 60 प्रतिभागियों को पंजीकरण किट वितरित की गई।

उद्घाटन सत्र में संस्थान के श्री नीरज भार्गव, वै.जी, सह निदेशक, डॉ. ललित मोहन पन्त, वै.एफ उपाध्यक्ष रा. का.स. एवं समूह निदेशक राजभाषा तथा श्री हितेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, विशिष्ट आमंत्रित वक्ता डॉ. राम विनय सिंह सहित एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा राजभाषा कार्यदल के सदस्य सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

4.3) यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.) देहरादून में दिनांक 25 अगस्त 2023 को 'राजभाषा हिन्दी के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान' विषय पर वर्ष 2023 की तृतीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान प्रस्तुति हेतु विशेष रूप से श्री विनोद कुमार तनेजा, वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.) तथा विभागाध्यक्ष, एन.आई.सी., प्रशिक्षण एकक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी, देहरादून को आमंत्रित किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के श्री नीरज भार्गव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक राजभाषा तथा विशिष्ट आमंत्रित वक्ता श्री विनोद कुमार तनेजा, वरिष्ठ निदेशक, एल.बी.एस.एन.ए.ए. मसूरी तथा संस्थान के डॉ. एल.एम. पन्त, वैज्ञानिक–एफ, एवं समूह निदेशक राजभाषा, श्री कृष्ण मुरारी, तकनीकी अधिकारी–सी, नामित राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख राजभाषा, श्री त्रिलोक सिंह, डी. पी.ओ. एवं प्रभारी अधिकारी राजभाषा अनुभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया ।

विशेष रूप से आमंत्रित वक्ता विनोद कुमार तनेजा, वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.) तथा विभागाध्यक्ष, एन.आई.सी., प्रशिक्षण एकक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी, देहरादून, द्वारा 1. 'राजभाषा की यात्रा – 'कलम विज्ञान से ए.आई. प्रौद्योगिकी तक' तथा 2.'राजभाषा के बेहतर उपयोग हेतु आधुनिक टूल्स का इंटरैक्टिव प्रदर्शन' तथा प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। तीसरा व्याख्यान संस्थान के श्री अनुज कुमार रुहेला जी ने – राजभाषा हिन्दी के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान' विषय पर दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के विभागों से नामित 48 प्रतिभागियों तथा 02 वक्ताओं और 10 राजभाषा कार्यदल तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों सहित कुल 60 वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में तीनों व्याख्यान रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक रहे। 'हिन्दी के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के योगदान' संबंधी नवीनतम जानकारियों से सभी प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

4.4) चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला दिनांक 18.12.2023 को प्रशासन, वित्त एवं भंडार संबंधी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग' विषय पर आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में कुल 04 व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। विशेष रूप से आमंत्रित वक्ता डॉ एम. आर. सकलानी, सेवा निवृत्त उप निदेशक राजभाषा – आयकर विभाग दिल्ली (निवासी – किशन नगर, देहरादून) ने 'प्रशासन, वित्त एवं भण्डार संबंधी पत्राचार' तथा 'राजभाषा नीति नियमों की जानकारी' विषयों पर 02 व्याख्यान प्रस्तुत किये। संस्थान के श्री ए.के. ढौंडियाल, भण्डार अधिकारी ने 'भण्डार संबंधी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा भण्डार विभाग में प्रयोग होने वाले प्रपत्र, वत्र तथा नोटशीट आदि के प्ररूप प्रदर्शित किये । संस्थान के

श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी ने 'हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओं संबंधी जानकाकरी' विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया । इन्होंने अपने व्याख्यान में केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओ की विस्तृत जानकारी दी।

इस कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न विभागों से नामित 48 अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा 03 वक्ताओं तथा 11 रा.का.स. एवं कार्यदल के सदस्यों सहित कुल 62 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

5. संस्थान स्तर पर राजभाषायी निरीक्षण

दिनांक 22 मई 2023 से 24 मई 2023 के दौरान संस्थान के जांचदल द्वारा संस्थान के सभी विभागों का राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम संतोषजनक रहा।

6. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2023–24 में 'हिन्दी दिवस' एवं 'तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का संयुक्त आयोजन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के पत्र सं. 12016/09/2023–रा.भा.(का.–2) दिनांक 13.06.2023 के अनुसार इस वर्ष 14 व 15 सितम्बर 2023 को 'हिन्दी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन संयुक्त रूप 'श्री छत्रपति स्पोर्टस् काम्प्लेक्स, बालेवाडी , पुणे, महाराष्ट्र में किया गया, जिसमें संस्थान के निम्नलिखित अधिकारियों ने प्रतिभागिता करके संस्थान का प्रतिनिधित्व किया–

1. श्री नीरज भार्गव, वैज्ञानिक 'एच', सह निदेशक राजभाषा
2. डॉ. ललित मोहन पंत, वैज्ञानिक 'एफ', समूह निदेशक राजभाषा एवं उपाध्यक्ष राजभाषा
3. श्री कृष्ण मुरारी, तकनीकी अधिकारी 'सी', समूह प्रमुख एवं नामित राजभाषा अधिकारी
4. श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी राजभाषा अनुभाग

7. हिन्दी पखवाड़ा 2023–24 का आयोजन–

संस्थान में 14 सितम्बर 2023 से 28 सितम्बर 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 14 व 15 सितम्बर 2023 को 'हिन्दी दिवस एवं

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन संयुक्त रूप 'श्री छत्रपति स्पोर्टस् काम्प्लेक्स, बालेवाडी , पुणे, महाराष्ट्र में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया । संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के दौरान 'शब्दज्ञान एवं अनुवाद', हिन्दी टिप्पण , प्रारूपण एवं पत्र लेखन', हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख एवं

टिप्पण', निबन्ध लेखन, व्याख्यान, कवितापाठ, हिन्दी टंकण, प्रश्न मंच आदि हिन्दी की विभिन्न लिखित एवं मौखिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

दिनांक 28.09.2023 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. एल.एम. पन्त वै.एफ द्वारा मुख्यालय से प्राप्त हिन्दी दिवस से संबंधित संदेश पढे गये । इस अवसर पर संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री नीरज भार्गव उत्कृष्ट वैज्ञानिक जी ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान में हमें राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति अपने संवैधानिक तथा नैतिक दायित्व का निर्वहन करना चाहिए । उन्होंने अनुवाद संबंधी 'कठस्थ' टूल तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी 'ई ऑफिस ' की उपयोगिता पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये। हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ–साथ संस्थान के कार्मिकों द्वारा लघु नाटक ' रस्सी का सांप' की प्रस्तुति भी की गई तथा हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं, संकल्प पत्रिका के लेखकों एवं रचनाकारों, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं नाटक के प्रतिभागियों, मूल रूप से हिन्दी में कार्य तथा डिक्टेशन के विजेता प्रतिभागियों तथा सभी निर्णायकों, मूल्यांकन कर्ताओं एवं संचालन कर्ताओं को पुरस्कार वितरित किये गये । वर्ष 2022–23 में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाले प्रशासन विभाग को 'राजभाषा चलशील्ड' आगामी एक वर्ष हेतु प्रदान की गई।

8. अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

डीआरडीओ के उत्तराखण्ड क्लस्टर आई.आर.डी.ई., देहरादून, डी.इ.ए.एल. देहरादून, आई.टी.एम. मसूरी, तथा डिबेर हल्द्वानी की वित्त वर्ष 2023–2024 की दो दिवसीय संयुक्त हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 08–09 फरवरी, 2024 को " रक्षा अनुसंधान का आत्मनिर्भर भारत हेतु योगदान" विषय पर डील देहरादून में आयोजित की जायेगी। इसके लिए संस्थान स्तर पर प्रचार–प्रसार कर दिया गया है 02 जनवरी 2024 तक संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु भेजने के लिए शोध पत्र व लेख माँगे गये हैं ।

संसदीय कार्य एवं राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा सी.वी.आर.डी.ई. चेन्नई में 10 –11 जनवरी 2024 को अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी राजभाषा सम्मेलन 'उन्मेष' का आयोजन किया जा रहा है जिसमें संस्थान के 07 अधिकारी भाग ले रहे हैं।

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून द्वारा राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार हेतु समुचित प्रयास किये जा रहे हैं।

डीआरडीओ वंदन

शशांक जोशी

मेरे भारत में चारों ओर ये नारा गुंजायमान–
जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान।
स्वावलम्बन की राह चल बना ये शक्तिमान,
इस प्रगति की नौका का खेवनहार अनुसंधान।
देश की रक्षा में तत्पर है एक प्रतिष्ठान,
बलस्य मूलं विज्ञानम् का जिसे सदैव ध्यान।
सशस्त्र बलों के बलवर्धन को करता अनुसंधान,
ऐसा अनुपम प्रतिष्ठान हमारा डीआरडीओ महान।
प्रक्षेपास्त्र, आयुध, वैमानिकी, नौसेना, जीव विज्ञान,
इलेक्ट्रॉनिकी व संगणन में रचता कीर्तिमान।
प्रबंधन में विशिष्टता है इसकी पहचान,
अनेकता में एकता– यहाँ है मूर्तिमान।
नवीन प्रणालियाँ रचकर बढ़ाता देश का मान,
सुरक्षित जल, थल, नभ हैं इसकी योग्यता का प्रमाण।
विज्ञान से भारत बना है अतुल बल निधान,
समर्थ हो कर भी अहिंसा में है इसकी शान।

ख्वाबों की एक्सपायरी

अरविन्द बंसल

हर ख्वाब की भी एक उम्र होती है,
हर उम्र के अलग ही ख्वाब होते हैं ।
वक्त रहते ये पूरे हो गये तो ठीक,
नहीं तो इनकी भी एक्सपायरी होती है ।।

बचपन में नया बस्ता भी ख्वाब था,
नया जूता भी आसमाँ से कम न था ।
फिर नौकरी के ख्वाब आने लगे,
फिर पैसा कमाने, घर बसाने के ख्वाब जाग गये ।।

ख्वाब बदलते रहे, मौसम साल गुजरते गये,
बड़ी गाड़ी, बड़ा घर और शान शौकत ।
बस ख्वाब बनते बिगड़ते गये,
हम इनमें ही सुलझते उलझते रहे ।।

अब जब उम्र सताने लगी,
अपनी ही काया भारी लगने लगी,
ख्वाब फिर से छोटे होने लगे,
छोटा सा घर, छोटी–छोटी खुशियाँ,
रह गये हम, बूढ़े और बुढ़िया ।।

यारों वक्त पर ख्वाब जी लिया करो,
एक्सपायरी का इंतजार न किया करो,
बाद में पूरे हो जायें, वो मजा नहीं आएगा,
एक्सपायरी से स्वाद ही बिगड़ जायेगा ।।

अकेला

वन्दना राय, पत्नी श्री कृष्ण मुरारी

ये मत कहो कि जग में क्या कर सकता नहीं अकेला
लाखों में काम करता एक सूरज अकेला
आसमान में हैं तारे टिमटिमाते
पर अन्धकार दूर करता एक चन्द्रमा अकेला
ये मत कहो कि जग में क्या कर सकता नहीं अकेला।

एक लंका पति रावण के अत्याचार से धरती को मुक्त कर दिया मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र ने अकेला
लंका पति रावण की स्वर्ण लंका को भस्म कर दिया महावीर पवनसुत बजरंग बली ने अकेला
ये मत कहो कि . . .

महाभारत की जंग में बड़े–बड़े सूरमाओं को मिट्टी में मिला दिया
श्री कृष्ण भक्त गांडीवधारी अर्जुन ने अकेला
मामा कंस के पास से मथुरा को मुक्त करा दिया
चक्र सुदर्शन गिरधारी श्री कृष्ण ने अकेला
ये मत कहो कि . . .

सूर्यास्त न होने वाले अंग्रेजों के साम्राज्य को ध्वस्त कर दिया
मातृभूमि के प्यार एवं सत्य अहिंसा की धार से महात्मा गाँधी ने अकेला
आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त देश पाकिस्तान को तोड़ कर बांग्लादेश बना दिया
वीरांगना भारतीय नारी कुशल नेतृत्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अकेला
ये मत कहो कि . . .

भ्रष्टाचारियों, काला–बाजारियों एवं पत्थर फेंकने वालों को सबक सिखा दिया
ओजस्वी नेता कुशल नेतृत्व माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने नोटबंदी कर अकेला
विश्वासघाती पाकिस्तान को औकात दिखा दिया पुलवामा हमले के बाद
अन्दर घुस हमला करने का साहस दिया भारतीय सेना ने अकेला
ये मत कहो कि . . .

500 वर्षों से चल रही श्री राम जन्म भूमि की लड़ाई
चन्द वर्षों में खत्म कर दी प्रिय हनुमान भक्त श्री माननीय मोदी ने अकेला
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी की कुटिया को बदल दिया
भव्य आलीशान मंदिर में माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने अकेला
ये मत कहो कि जग में क्या कर सकता नहीं अकेला।
ये मत कहो कि जग में क्या कर सकता नहीं अकेला।।

भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें

उर्मिला
पत्नी श्री पवन कुमार सूरज

माथे रज का तिलक लगाके, काया को कंचन कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

जिन प्राणों के बलिदानों ने, आजादी को खींचा है।
पावन चंदन इस माटी को, निज शोणित से सींचा है।।
लिए हौसलें चट्टानों से, काल हाथ में भींचा है।
जिनके दम से भारत माँ का, विकसित हुआ बगीचा है।।
उनके अनगिन बलिदानों का, हाथ जोड़ सुमिरन कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

अगणित सुधिजन भारत–रज में, उत्पन्न हुआ करते हैं।
अपने ज्ञान अलख से जग में, उजास रवि सा भरते हैं।।
नैतिक पथ पर बढ़ते जाते, नहीं किसी से डरते हैं।
देकर परहितकारी शिक्षा, पीर जगत की हरते हैं।।
आत्मज्ञान की लेकर दीक्षा, आत्मा को कुंदन कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

सौंधी–सौंधी इस माटी की, खुशबू अमिट निराली है।
अनगिन फसलें इसमें उपजे, घर भरती खुशहाली है।।
प्रकृति बड़ी अनुपम हितकारी, सुखदायक हरियाली है।
विश्व बंधुत्व की खेती में, मानवता की बाली है।
इस माटी से मनवा जोड़ो, हर दुख का भंजन कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

इस माटी की चुनरी धानी, अंबर अद्भुत नीला है।
कल–कल बह नदियों का पानी, हर मौसम रंगीला है।।
इस माटी में पैदा होकर, हरि भी रचते लीला है।
पशु– पक्षी नित कलरव करते, कोयल गान सुरीला है।।
जग अलबेली इस माटी का, शीश नवा वंदन कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

अद्भुत उर्वरता इस रज की, जगत निराली होती है।
खनिज सम्पदा के क्या कहने, सागर उगले मोती है।।
बहु औषधि संजीवन जैसी, जग में जीवन बोती है।
सत्य, अहिंसा को दुनिया में, बनके वाहक ढोती है।
भारत माता की रक्षा में, जीवन यह अर्पण कर लें।
'भारत की पावन माटी का, आओ! अभिनंदन कर लें।।'

आदमी और कुत्ता

पवन कुमार सूरज

आज प्रातः काल, जब मैं सैर पर निकला, तो रास्ते में शर्मा जी दिखे, आगे–आगे कुत्ता धीरे– धीरे दौड़ रहा था और शर्मा जी कुत्ते के गले में पड़ी रस्सी को, अपने हाथों से पकड़े हुए, कुत्ते के पीछे–पीछे भागे जा रहे थे।

मैंन आवाज दी 'शर्मा जी रुकिए तो, जरा सुनिए, एक बात तो बतलाते जाइए?' आज सुबह–सुबह कहाँ भागे जा रहे हैं?"

शर्मा जी झल्लाकर बोले, 'तुम्हें दिखता नहीं मैं भाग नहीं रहा हूँ। मैं तो अपने कुत्ते को घुमा रहा हूँ।'

मैंने तुरंत कहा, 'शर्मा जी मुझे तो लगता है आपका कुत्ता ही आपको घुमा रहा है, आप अपने कुत्ते को नहीं घुमा रहे हो!'

शर्मा जी खीजकर बोले, 'नहीं–नहीं! मैं ही कुत्ते को घुमा रहा हूँ तुम्हें नजर नहीं आता क्या? उसकी रस्सी मेरे हाथों में है।'

मैंने कहा, "चलो मान लिया आप ही कुत्ते को घुमा रहे, पर जब तक आपका यह कुत्ता नहीं आया था, तब आपको कभी भी सुबह टहलते नहीं देखा, इसका तो यह अर्थ हुआ कि आपका कुत्ता ही आपको सुबह शाम टहलाता है।'

शर्मा जी की कहने लगे, 'तुम्हारी जो इच्छा हो वो समझ लो! पर जो भी हो , इस नियमित सैर के दो फायदे हैं एक तो मेरा सुबह शाम टहलना हो जाता है और दूसरा इसी बीच कुत्ता अपनी दीर्घ और लघु शंका का भी निवारण कर लेता है।'

मैंने कहा, 'शर्मा जी क्या जमाना आ गया है अब कुत्तों की दीर्घ और लघु शंका निवारण के लिए आदमियों को सुबह शाम कुत्तो के संग टहलना पड़ता है।'

'मुझे तो ऐसा लगता है आजकल कुत्ते तो आदमी बनते जा रहे है और आदमी कुत्ता होता जा रहा है! पहले कुत्ते घर की रखवाली किया करते थे, अब आदमियो को कुत्ते की रखवाली करनी पड़ती है। पहले आदमी के साथ में यदि कुत्ता होता था, तो आदमी स्वतंत्र घूमता था और आजकल यदि कुत्ते के साथ में आदमी हो तो कुत्ता स्वछंद घूमता है।'

शर्मा जी सिर हिलाकर कहने लगे, 'कहते तो तुम ठीक हो सूरज जी! पर हमे जमाने के साथ चलना पड़ता है और समय के अनुसार कुत्ते को आदमी और आदमी को कुत्ता बनना पड़ता है।'

एक पल

सुन्दर सिंह धोनी

जो बीत गया वो समय गया,
गठरी यादों की छोड़ गया,
वह पल, दो पल पहले बच्चा था,
कभी युवा भी था, फिर प्रौढ़ हुआ ।

फुर्सत का वो एक पल था,
जो सिरहाने नीचे रखा था,
सोचा एक पल को सो लूँ,
पर पलक झपकते दौड़ गया ।

मेरी उम्मीदों की, आशाओं की,
नींव जो होने वाला था,
वो एक पल मुट्ठी से निकला,
मुझको अन्दर तक तोड़ गया ।

और तब बोला अगला ही पल,
हिम्मत हौसला रख थोड़ा,
सफर का मजा मोड़ों से है,
आ जायेगा एक मोड़ नया ।

निन्दा हो या फिर तारीफें,
खुशी मिले या दुःख टूटे,
नुकसान न होता एक पल का,
क्योंकि हर पल एक पल जोड़ गया,
क्योंकि हर पल एक पल जोड़ गया ।

मेरा सीमा प्रहरी

रामकिशन बड़थ्वाल (अतीत)

सारे देश का गर्व है, तेरी ही धाक पर
तू बैठा चुपचाप, सुनसान बस दुश्मन की ताक पर।

गर्व तुझे भी है, तू है एक सैनिक देश का
किसी का क्या पता, तेरे इस भेष का।
चैन से नहीं रह पाता तू सारी रात भर
तू बैठा चुपचाप, सुनसान बस दुश्मन की ताक पर।

लोग कहते हैं कि जंगलों में राज है शेर का
लेकिन तू तो इसको अपना डेरा बनाये बैठा है।
कहाँ गया वा तेरा मखमली बिछौना?
यहाँ घास की सेज बनाकर उसी पे तू लेटा है।
चारों पहरों का स्वामी है, तू जागा सारी रात भर
तू बैठा चुपचाप, सुनसान बस दुश्मन की ताक पर।

तुझे घर से दूर याद बहुत आती होगी,
तू तो बन बैठा देश का एक भुक्तभोगी।
न माया मोह है तेरे ऊपर किसी का
तुझे अडिग ही रहना अपने इस अरमान पर।
तू बैठा चुपचाप, सुनसान बस दुश्मन की ताक पर।

कर्म भूमि हो या रणभूमि
तू है अडिग अजर अपनी शान पर।
धन्य हो मेरे सीमा प्रहरी तुम निर्भीक रहना अपनी आन पर,
तुझे नहीं चिन्ता अपनी अमूल्य जान पर
तू बैठा चुपचाप, सुनसान बस दुश्मन की ताक पर।

हिन्दी का करो सम्मान

मधुसूदन उपाध्याय

हिन्दी एक भाषा है ऐसी,
जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही जाती लिखी।।

सारे देश को एक सूत्र में पिरोती,
वो सरल–सम्पर्क भाषा हिन्दी ही होती।।

हिन्दी जोड़े मन–मानुष, जोड़े परिवेश,
जोड़े गाँव, नगर प्रान्त, जोड़े सारा देश।।

हिन्दी एकता–अखण्डता को बनाती है मजबूत,
आमजन की भाषा हिन्दी, देती है इसका सबूत।।

हिन्दी एक भाषा है ऐसी,
जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही जाती है लिखी।।

मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा का सम्मान,
पर जन–मानुष की भाषा, हिन्दी ही असली पहचान।।

जब हम हिन्दी की खाते हैं, हिन्दी से ही सम्मान पाते हैं,
तो फिर, बोलने व लिखने से क्यों शरमाते हैं ?

गाँव–नगर, देश–विदेश, हिन्दी को पढ़ाना होगा,
हिन्दी को विश्व पटल पर आगे बढ़ाना होगा।।

जिसमें मिठास, माधुर्य की लगी है बिंदी,
सबसे प्यारी भाषा, वह है हिन्दी।।

हिन्दी एक भाषा है ऐसी,
जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही जाती है लिखी।।

मात्रभाषा हिन्दी ऐसी भाषा इकलौती,
माँ, मातृभूमि के जैसी ममता दिखाती।।

सुमधुर, सुरीली ये है बोली,
जैसे मधु, मिश्री संग है घोली।।

पंक्तियों, पन्नों और किताबों में यही,
संवादों, सवालों और जवाबों में यही।।

गीतों, कविताओं, बातचीतों में कहाँ नहीं,
सभी भाषणों में बोली जाती रही।।

हिन्दी एक भाषा है ऐसी,
जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही जाती है लिखी।।

चौराहों–चौपालों में, सभा महफिलों में,
हिन्दी ही होठों पर, हिन्दी ही दिलों में।।

हिन्दी की बिल्कुल अलग है पहचान,
यहाँ हर रिश्ते को अलग–अलग मधुर सा नाम।।

हिन्दी का सम्मान, देश का सम्मान,
हिन्दी बोलने–लिखने में करो अभिमान।।

विदेशियों ने भी जान लिया, यदि भारत में करना है व्यापार,
बिना हिन्दी में प्रचार किए, नहीं होगा बेड़ापार।।

जिन्होने घर–गाँव देश–परदेश हिन्दी है अपनाई,
उन सभी हिन्दी प्रेमियों को बहुत–बहुत बधाई।।

चले चाँद की ओर

रक्षिता उपाध्याय,
पुत्री श्री मधुसूदन उपाध्याय

नहीं दूर अब चंदा मामा,
दुनिया को दिखलाया है,
अपना चंद्रयान भारत ने,
चाँद पर पहुँचाया है, ।

कोई कहता चंदा को,
प्रियसी के चेहरे जैसा,
कोई व्रत उपवास में पूजे,
और साथ में अर्घ्य देता,

किसी के लिए बस ये,
एक पिण्ड खगोलिय है,
नित्य नए आकार में आए,
रूप अनेक ये लिए हुए है ।
विक्रम और प्रज्ञान हमारे,
नए राज अब खोलेंगे,
उनके भेजे चित्र और आँकड़े,
लाखों बातें बोलेंगे ।
सारा विश्व मानेगा डंका,
अपना चंद्रयान जो जानकारी लाएगा,
जल्दी अपना भारतवर्ष,
फिर विश्वगुरू कहलाएगा ।

सामान्य ज्ञान

राघव उपाध्याय
पुत्र श्री एम.एस. उपाध्याय

1. पोलियो रोग का क्या कारण है ?
   अ. विषाणु **ब.** जीवाणु **स.** प्रोटोजोआ
   द. कवक
2. किसमे रीड की हड्डी पाई जाती है ?
   अ. जोक **ब.** सर्प **स.** केचुआ **द.** सेंटीपीड
3. 'अर्थशास्त्र' पुस्तक के रचियता कौन हैं ?
   अ. कौटिल्य **ब.** नागार्जुन **स.** बाणभट्ट
   द. मेगस्थनीज
4. 'तोता ए हिन्द' के उपनाम से कौन जाने जाते हैं ?
   अ. अकबर **ब.** इब्नबतूता **स.** अमीर खुसरो
   द. दयाराम साहनी
5. संगम साहित्य की रचना किस भाषा में की गयी थी ?
   अ. संस्कृत **ब.** पाली **स.** तमिल **द.** प्राकृत
6. अर्जुन पुरस्कार की शुरुआत किस वर्ष हुई ?
   अ. 1947 **ब.** 1949 **स.** 1961 **द.** 1983
7. सूर्य के चारों ओर घुमने वाले खगोलीय पिंड क्या कहलाते हैं ?
   अ. ग्रह **ब.** उपग्रह **स.** पुछल्ल तारा
   द. उपरोक्त सभी
8. माउंट एवेरस्ट फतह करने वाली पहली भारतीय महिला कौन बनीं ?
   अ. कल्पना चावला **ब.** रजिया सुल्तान
   स. बछेन्द्री पाल **द.** सुचेता कृपलानी
9. भारत के पहले रेलमंत्री कौन थे?
   अ. लाल बहादुर शास्त्री **ब.** ललित नारायण मिश्र
   स. बंसीलाल **द.** जॉन मथाई
10. 'मिट्टी की बारात' नामक कविता संग्रह के लेखक कौन हैं ?
    अ. जय शंकर प्रसाद **ब.** शिव मंगल सिंह सुमन
    स. महादेवी वर्मा **द.** मैथलीशरण गुप्त

उत्तरः 1. अ, 2. ब, 3. अ, 4. स, 5. स, 6. स, 7. अ, 8. स, 9. द, 10. ब, 11. द, 12. अ, 13. ब, 14. अ, 15. द, 16. ब, 17. ब, 18. द, 19. अ, 20. ब ।

हिन्दी

आर्निका सोनी

मीरा, केशव, प्रेमचन्द्र, तुलसी, माखन, कबीर,
अब और भला कैसे कहें हिन्दी की तकदीर।

शब्द–शब्द संवेदना, अक्षर–अक्षर प्यार,
हर सुख से सम्पन्न है हिन्दी का संसार।

निर्मल–कोमल–सुहृदय सी मीठी है जिसकी बोली,
रस, छंद और अलंकार से सजी मनोहर रंगोली।

पर जननी बन कर सदियों से जिसने सभ्यताएँ पाली है,
क्यों आज उस माँ का दामन अपने पूतों से खाली है?

जिसकी वर्तनी समृद्ध और वैज्ञानिक वर्णमाला है,
क्यों आज उसके हिस्से में उपेक्षाओं का हाला है?

जिस भाषा की सत्रह बोलियाँ, पाँच उपभाषाएँ हैं,
उस जननी हिन्दी को हमसे थोड़ी सी आशाएँ हैं।

भाषा उत्थान की यद्यपि बहुत कोशिशें जारी हैं,
उन कोशिशों पर तथापि औपचारिकताएँ भारी हैं।

भाषा–संस्कृति से रहा यदि ऐसे ही विद्वेष,
आने वाली पीढ़ियाँ खोजेंगी अवशेष ॥

जिन्दगी

पूर्णिमा गर्ग

थोड़ी थक सी जाती हूँ अब मैं,
इसलिए दूर निकलना छोड़ दिया है,
पर ऐसा भी नहीं है कि अब,
मैनें चलना ही छोड़ दिया है ।

फासले अक्सर रिश्तों में,
अजीब सी दूरियाँ बढ़ा देते हैं,
पर ऐसा भी नहीं है कि अब मैने,
अपनों से मिलना ही छोड़ दिया है ।

हाँ जरा सा अकेला महसूस करती हूँ,
खुद को अपनों की ही भीड़ में,
पर ऐसा भी नहीं है कि अब मैने,
अपनापन ही छोड़ दिया ।

याद तो करती हूँ मैं सभी को,
और परवाह भी करती हूँ सबकी,
पर कितनी करती हूँ,
बस बताना छोड़ दिया ।

इंद्रिय ग्राह्यता

संदीप नायक

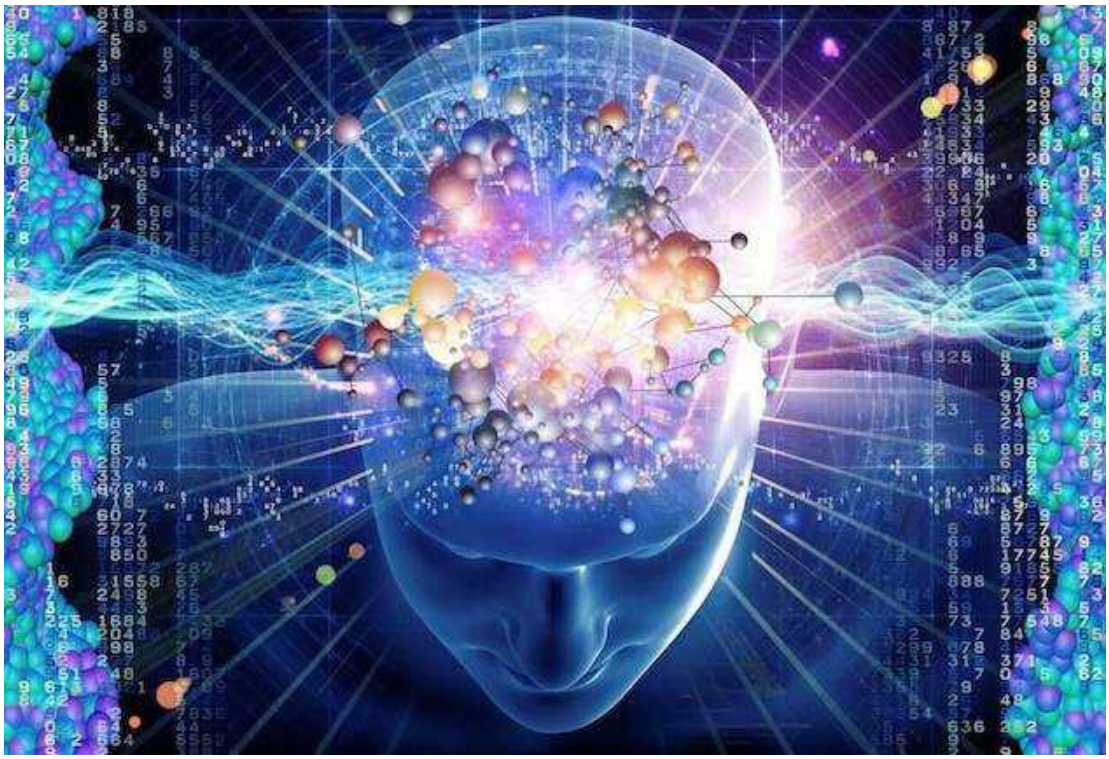

साहित्य में इंद्रिय ग्राह्यता के आधार पर दो प्रकार के माने जाते हैं–

(1) दृश्य

(2) श्रव्य

जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि के द्वारा भी रसानुभूति कराती है उसे नाटक कहते हैं।

नाटक अभिनय के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही नाटक है । यह कथा प्रधान विद्या है अर्थात् कथात्मक तत्वों की प्रधानता इसमें होती है । यह विद्या आरम्भ विकास, चरम एवं अंत के माध्यम से प्रदर्शित की जाती है ।

यानी कथा का आरम्भ होना, फिर विकास तय करके अपने चरम पर पहुँच कर अन्त में संदेश देते हुए अन्त की ओर अग्रसर होना है ।

इस विद्या में समाज और व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन अभिनय के द्वारा किया जाता है ।

इसका उद्देश्य शिक्षण और मनोरंजन के साथ–साथ मानवीय संवेदना, समस्या एवं समाज के यथार्थ का चित्रण करना है । वैसे तो हिन्दी में नाटक लिखने की परम्परा भारतेन्दु युग से मानी गयी है लेकिन आज के समय में नाटक रंगमंच तक ही सीमित नहीं है । यह रंगमंच से फिल्मों, नुक्कड़ नाटकों, रेडियो नाटकों और दूरदर्शन पर धारावाहिकों के रूप में व्याप्त हो गया है ।

हमारी भारतीय परंपरा में नाटक को पंचमवेद कहा जाता है । इसके मुख्य अंग हैं–

(1) कथावस्तु, (2) पात्र, (3) संवाद, (4) देशकाल तथा वातावरण, (5) उद्देश्य, (6) शैली, (7) अभिनय

मशीनी अनुवादः तकनीकी प्रयोग और विश्लेषण

प्रकाश नीरव

सारांश

सामान्य मशीन अनुवाद क्या है? जब एक मशीनी अनुवाद प्रणाली का कार्यान्वयन नहीं किया गया है और एक विशिष्ट डोमेन पर आधारित नहीं है, तो इसे आमतौर पर 'जेनेरिक' मशीनी अनुवाद कहा जाता है। गूगल ट्रांसलेट (Google Translate), माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेट (Microsoft Translator) और अन्य निःशुल्क सार्वजनिक अनुवाद प्रणालियाँ इस श्रेणी में आती हैं। सामान्य मशीनी अनुवाद अक्सर पाठ के एक टुकड़े का सामान्य अर्थ प्राप्त करने के लिए उपयोगी हो सकता है, लेकिन इसमें व्याकरण, वाक्य रचना और अन्य त्रुटियों की संभावना होती है । सामान्य मशीनी अनुवाद काफी मात्रा में मानव संपादन के बिना सामग्री को पुनःप्रकाशित करने के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ अनुवादक सामान्य मशीनी अनुवाद को संपादित करने से भी इंकार कर देंगे क्योंकि अक्सर एक ही पाठ का पूरी तरह से अनुवाद करने की तुलना में संपादित करना अधिक काम होता है। क्योंकि Google और Microsoft जैसी विशाल कंपनियाँ जेनेरिक मशीनी अनुवाद प्रदान करती हैं, कई लोग गलती से मानते हैं कि अनुवाद की गुणवत्ता सर्वोत्तम संभव और अत्याधुनिक है। एक अनुकूलित मशीनी अनुवाद इंजन जिसे विशेषज्ञ रूप में एक उद्देश्य के लिए अनुकूलित किया गया है, बहुत अधिक गुणवत्ता वाले अनुवाद प्रदान करेगा और कई मामलों में अनुवादित वाक्यों के लिए बहुत कम या बिल्कुल भी संपादन की आवश्यकता नहीं होगी। प्रस्तुत शोध में अनुवादकों और उद्यमों को गुणवत्तापूर्ण अनुवाद प्रदान करने के लिए अनुकूलित मशीनी अनुवाद समाधान पर मशीनी अनुवाद के तकनीकी प्रयोग का विश्लेषण किया गया है ।

मूल शब्दः मशीनी अनुवाद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सांख्यिकीय अनुवाद, हाइब्रिड मशीन अनुवाद, न्यूरल मशीन अनुवाद, एचएमटी, एनएलपी ।

1. प्रस्तावना

सीधे शब्दों में कहें तो मशीनी अनुवाद (एमटी) एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक कंप्यूटर प्रोग्राम स्वचालित रूप से पाठ को एक स्रोत भाषा से एक अलग लक्ष्य भाषा में अनुवादित करता है । मशीन भाषा अनुवाद का 1950 के दशक से एक लंबा और दिलचस्प इतिहास है। समय के साथ, प्रौद्योगिकी और सटीक अनुवाद के लिए एक व्यवहार्य समाधान के रूप में विकसित हुई है । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) और कंप्यूटिंग क्षमताओं में हुई प्रगति ने मशीनी अनुवाद को मुख्यधारा में ला दिया ।

2. मशीन अनुवाद के लाभ (एमटी)

अनुवाद प्रक्रिया में मशीनी अनुवाद एक अनिवार्य उपकरण है। इसका उपयोग अकेले या मानव पोस्ट–एडिटिंग के संयोजन में किया जा सकता है। मशीनी अनुवाद(एमटी) आपके अनुवाद कार्यप्रवाहों के लिए तीन प्राथमिक लाभ प्रदान करता हैः

(क) तीव्र अनुवाद गति

उच्च मात्रा वाले अनुवाद परियोजनाओं के लिए मशीनी अनुवाद लाखों शब्दों का अनुवाद कर सकता है। लेकिन

गति ही एकमात्र लाभ नहीं है ! अधिक सामग्री के अनुवाद के रूप में एमटी स्मार्ट होने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) का उपयोग करता है । साथ ही, एमटी उच्च मात्रा वाली सामग्री को प्रबंधित और टैग करने के लिए टीएमएस के साथ काम कर सकता है । यह आपको व्यवस्थित रहने में मदद करता है जब आपको सामग्री को कई भाषाओं में त्वरित रूप से अनुवादित करने की आवश्यकता होती है ।

(ख) उत्कृष्ट भाषा चयन

अधिकांश प्रमुख मशीनी भाषा अनुवाद प्रदाता 50–100 भाषाओं का अनुवाद कर सकते हैं । ये प्रोग्राम एक साथ कई भाषाओं का अनुवाद करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं ताकि आप वैश्विक उत्पादों और दस्तावेजीकरण अद्यतनों को रोल आउट कर सकें । एमटी अंग्रेजी से फ्रेंच या अंग्रेजी से स्पेनिश जैसे भाषा युग्म के लिए अच्छी तरह से अनुकूल है । कुछ अद्यतन एमटी द्वारा अंग्रेजी से हिंदी व हिंदी से अंग्रेजी में सटीकता से अनुवाद किया जा रहा है ।

(ग) कम लागत

पोस्ट–एडिटिंग के लिए मानव अनुवादकों की आवश्यकता होने पर भी, MT अनुवाद के समय और लागत में कटौती करता है । एमटी बुनियादी लेकिन उपयोगी अनुवादों का निर्माण करके प्रारंभिक स्थरीय शब्दों का ध्यान रखता है, जिसे एक मानव अनुवादक परिष्कृत और संपादित कर सकता है । इस तरह, समाप्त संस्करण पाठ के मूल उद्देश्य के अधिक बारीकी से पालन करेंगे, और सामग्री को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है ।

3. मशीनी अनुवाद के प्रकार

मशीनी अनुवाद के चार अलग–अलग प्रकार हैं – सांख्यिकीय मशीन अनुवाद (SMT), नियम–आधारित मशीन अनुवाद (RBMT), हाइब्रिड मशीन अनुवाद (HMT), और न्यूरल मशीन अनुवाद (NMT) । यहां प्रत्येक प्रकार का अवलोकन दिया गया है:

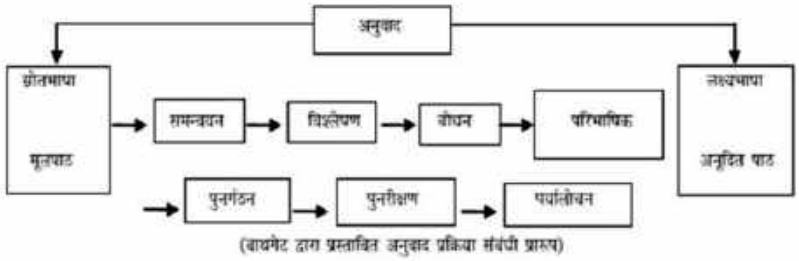

आरेख–2

3.1 नियम–आधारित मशीनी अनुवाद (आरबीएमटी): आरबीएमटी (RBMT) – एमटी का प्रारंभिक रूप– व्याकरणिक नियमों के आधार पर सामग्री का अनुवाद करता है। आरबीएमटी के विकसित होने के बाद से मशीनी अनुवाद तकनीक में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, इसलिए इसके कुछ नुकसान हैं। इन कमियों में बड़ी मात्रा में मानव आरबीएमटी पोस्ट–संपादन की आवश्यकता और भाषाओं को मैन्युअल रूप से जोड़ना शामिल है । इस कम अनुवाद गुणवत्ता के बावजूद, उन बुनियादी स्थितियों में उपयोगी है जहाँ अर्थ की त्वरित समझ की आवश्यकता होती है ।

3.2 सांख्यिकीय मशीन अनुवाद (एसएमटी): एसएमटी टेक्स्ट शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों के बीच संबंधों का एक सांख्यिकीय मॉडल बनाकर काम करती है । यह तब इस

आरेख - 3

अनुवाद मॉडल को दूसरी भाषा में लागू करता है और उन्हीं तत्वों को नई भाषा में परिवर्तित करता है । एसएमटी, आरबीएमटी पर कुछ हद तक सुधार करती है लेकिन फिर भी कई समस्याओं को साझा करती है ।

3.3 हाइब्रिड मशीन अनुवाद (एचएमटी): एचएमटी, आरबीएमटी और एसएमटी का मिश्रण है। एचएमटी ट्रांसलेशन मेमोरी का लाभ उठाता है, जिससे यह गुणवत्ता के मामले में कहीं अधिक प्रभावी हो जाता है। हालाँकि,

एचएमटी में भी कुछ कमियाँ हैं, जिनमें से सबसे बड़ी है मानव संपादन की आवश्यकता।

3.4 तंत्रिका मशीन अनुवाद (एनएमटी): एनएमटी भाषाओं को सीखने और उस ज्ञान को लगातार सुधारने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करता है। इस तरह, यह मानव मस्तिष्क में तंत्रिका नेटवर्क की नकल करने का प्रयास करता है। अन्य प्रकार के एआई अनुवाद की तुलना में एनएमटी अधिक सटीक है । एनएमटी के साथ, भाषाओं को जोड़ना और सामग्री का अनुवाद करना आसान हो गया है। क्योंकि एनएमटी बेहतर अनुवाद प्रदान करता है, यह तेजी से एमटी उपकरण विकास में मानक बनता जा रहा है।

एनएमटी प्रशिक्षण डेटा को शामिल करके काम करता है । उपयोगकर्ता की जरूरतों के आधार पर, डेटा सामान्य या कस्टम हो सकता है ।

(क) सामान्य डेटा: यह मशीनी अनुवाद इंजन (MTE) द्वारा समय के साथ किए गए अनुवादों से सीखे गए सभी डेटा का योग है । यह डेटा पाठ, आवाज और दस्तावेजों सहित विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए एक सामान्यीकृत अनुवाद उपकरण तैयार करता है।

(ख) कस्टम या विशिष्ट डेटा: यह किसी विषय वस्तु में विशेषज्ञता बनाने के लिए मशीनी अनुवाद इंजन को दिया जाने वाला प्रशिक्षण डेटा है। विषयों में इंजीनियरिंग, डिजाइन, प्रोग्रामिंग, या किसी भी विषय की अपनी विशेष शब्दावलियों और शब्दकोशों के साथ शामिल हैं।

4. मशीन अनुवाद के लिए विचार

यहाँ कुछ ऐसे कारक हैं जिन पर आपको अपनी परियोजना के लिए एमटी उपकरण चुनते समय विचार करना चाहिए:

(क)बजट: न्यूरल मशीन अनुवाद कभी–कभी एसएमटी की तुलना में प्रशिक्षित करने के लिए अधिक महंगा होता है, लेकिन अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार खर्च को सही ठहरा सकता है।

(ख) उद्योग: कुछ उद्योगों में जटिल और तकनीकी भाषा का अनुवाद करना शामिल है, जिसके लिए एनएमटी द्वारा प्रदान किए जाने वाले अधिक परिष्कृत प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है ।

(ग) भाषा जोड़ना: SMT कुछ भाषा जोड़ियों के लिए सबसे अच्छा काम करती है। उदाहरण के लिए, समान सिंटैक्स और भाषाई नियमों वाली लैटिन–आधारित भाषाएं मशीनी अनुवाद के साथ सबसे अधिक संगत हैं।

(घ) सामग्री की मात्रा: NMT को संसाधित करने और सीखने के लिए बड़ी मात्रा में स्रोत पाठ की आवश्यकता होती है, इसलिए यह छोटी परियोजनाओं के लिए उपयुक्त नहीं है ।

(ड़) ग्राहक–सामना बनाम आंतरिक सामग्री: ग्राहक–सामना करने वाली सामग्री, जैसे कि बिक्री या विपणन सामग्री जो ब्रांड गुणवत्ता को दर्शाती है, को योग्य अनुवादकों के साथ मशीन अनुवाद और मानव पोस्ट–संपादन के सबसे परिष्कृत संयोजन की आवश्यकता होती है । जब लागत और समय कारक होते हैं, बुनियादी आंतरिक दस्तावेजीकरण या कर्मचारी संचार को मूल एमटी के साथ अनुवादित किया जा सकता है ।

5. कौन सा मशीनी अनुवाद इंजन सबसे अच्छा है?

Google, Amazon, और Microsoft जैसे प्रमुख तकनीकी खिलाड़ी NMT का उपयोग अपने मशीन अनुवाद इंजन (MTE) को शक्ति प्रदान करने के लिए करते हैं। जब हम विभिन्न इंजनों की तुलना करते हैं, तो यह समझना आवश्यक है कि वे लगातार सीख रहे हैं और सुधार कर रहे हैं। कुछ शीर्ष मशीनी अनुवाद इंजन इस प्रकार हैं:

1) गूगल ट्रांसलेट

2) अमेजन अनुवाद

Amazon Translate के लिए लोगो (Amazon का मशीनी अनुवाद टूल) Amazon Translate Amazon Web Services (AWS) के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। कुछ सबूत बताते हैं कि अमेजॅन अनुवाद कुछ भाषाओं, विशेष रूप से चीनी के अधिक सटीक अनुवाद प्रदान करता है।

1) माइक्रोसॉफ्ट अनुवादक

Microsoft अनुवाद के लिए लोगो (Microsoft का मशीनी अनुवाद AI) Microsoft Translator MS Office और Skype जैसे उत्पादों के साथ एकीकृत होता है। यह सुविधा दस्तावेजों और संगत कार्यक्रमों में अनुवाद के लिए त्वरित पहुँच प्रदान करती है।

2) वाटसन भाषा अनुवादक

IBM Watson के लिए लोगो: IBM का मशीनी अनुवाद उपकरण वाटसन लैंग्वेज ट्रांसलेटर आईबीएम का एमटी टूल है। यह IBM Watson Data और IBM Watson Studio के साथ एकीकृत है। ये उपकरण डेटा को प्रबंधित करने और AI मॉडल बनाने में मदद करते हैं।

6. मशीन अनुवाद शब्दावली

मशीन अनुवाद शब्दावली Alignment tool	एप्लिकेशन जो तालिका में स्रोत और लक्ष्य भाषाओं में एक ही पाठ के संस्करणों को स्वचालित रूप से जोड़ता है। Application that automatically pairs versions of same text in the source and target languages in a table.
कृत्रिम बुद्धिमत्ता Artificial intelligence (AI)	बुद्धिमान मशीन बनाने के लिए समर्पित कंप्यूटर विज्ञान की शाखा जिसने एमटी की ओर पहला प्रयास किया। Branch of computer science devoted to creating intelligent machines that produced the first efforts toward MT.
स्वचालित अनुवाद Automatic translation	मानव अनुवादक द्वारा किसी इनपुट के बिना मशीन–आधारित अनुवाद प्रक्रिया Machine-based translation process without any input by a human translator
पुनः अनुवाद Back translation	पहले अनुवादित पाठ को उसकी स्रोत भाषा में वापस अनुवाद करने की प्रक्रिया Process of translating a previously translated text back into its source language
कैट टूल्स CAT tools	अनुवाद की सुविधा के लिए मानव अनुवादकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कंप्यूटर–सहायता प्राप्त अनुवाद कार्यक्रम Computer-assisted translation programs used by human translators to facilitate translation
शब्दकोश Glossary	ज्ञान के किसी विशेष क्षेत्र में उन शब्दों की परिभाषाओं के साथ शब्दों की वर्णानुक्रमिक सूची An alphabetical list of terms in a particular domain of knowledge with the definitions for those terms
कृत्रिम भाषा सेवा प्रदाता (एलएसपी) Language services provider (LSP)	EHLION या व्यवसाय जैसा संगठन जो अनुवाद जैसी भाषा सेवाएँ प्रदान करता है An organization like EHLION or business that provides language services such as translation
मशीनी अनुवाद (एमटी) Machine translation (MT)	अनुवाद विशेष रूप से एक मशीन द्वारा किया जाता है Translation carried out exclusively by a machine
तंत्रिका मशीन अनुवाद Neural machine translation	न्यूरल मशीन अनुवाद अनिवार्य रूप से खुद को सिखाता है कि एक बड़े तंत्रिका नेटवर्क का उपयोग करके कैसे अनुवाद किया जाए Neural machine translation essentially teaches itself how to translate by using a large neural network
पोस्ट–एडिटिंग (पीईएमटी के रूप में भी जाना जाता है–मशीन अनुवाद का पोस्ट–एडिटिंग, या एमटीपीई–मशीन ट्रांसलेशन पोस्ट–एडिटिंग) Post-editing (also known as PEMT—post-editing of machine translation, or MTPE—machine translation post-editing)	प्रक्रिया जिसके दौरान मानव एमटी आउटपुट की गुणवत्ता की समीक्षा और सुधार करता है Process during which humans review and improve the quality of MT output
गुणवत्ता आश्वासन Quality assurance	अनुवाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन की गई प्रक्रिया, जिसमें त्रुटियों को कम करने के लिए विशिष्ट समीक्षा और जाँच प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है Process designed to ensure translation quality, in which specific review and checking processes are followed in order to minimize errors

नियम–आधारित मशीनी अनुवाद Rule-based machine translation	विधि जो भाषा विशेषज्ञों द्वारा विकसित व्याकरण और भाषा के नियमों और अत्यधिक अनुकूलन योग्य शब्दकोशों पर निर्भर करती है Method that relies on grammar and language rules developed by language experts, and on highly customizable dictionaries
वाक्यांश Segment	वाक्य या वाक्यांश जो कुछ भाषा निर्माण नियमों जैसे विराम चिह्न के आधार पर शेष पाठ से अलग होता है Sentence or phrase that is separated from the rest of a text based on certain language construction rules such as punctuation
मूल फाइल Source file	फाइल जिसमें स्रोत दस्तावेज अपने मूल रूप में होता है जो बाद की अनुवाद प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक होता है File that contains the source document in its original form which is required for the subsequent translation processes
सांख्यिकीय मशीनी अनुवाद Statistical machine translation	विधि जो भाषाई नियमों और शब्दों पर निर्भर नहीं करतीय इसके बजाय, यह मौजूदा मानव अनुवादों की बड़ी मात्रा का विश्लेषण करके सीखता है Method that does not rely on linguistic rules and words; instead, it learns by analyzing large volumes of existing human translations
लक्ष्य भाषा Target language	भाषा जिसमें पाठ का अनुवाद किया गया है Language into which the text is translated
टर्मबेस Termbase	एक डेटाबेस जिसमें शब्दावली और संबंधित जानकारी हैय अधिकांश बहुभाषी हैं और विभिन्न भाषाओं में शब्दावली डेटा शामिल हैं A database containing terminology and related information; most are multilingual and contain terminology data in different languages
अनुवाद मेमोरी Translation memory	अनुवादित पाठ खंड जो एक डेटाबेस में संग्रहीत हैं Translated text segments that are stored in a database

7. मशीनी अनुवाद का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

आजकल, मशीनी अनुवाद विश्लेषण पर निर्भर करता है – लेकिन प्राकृतिक भाषा अपने स्वभाव से ही विश्लेषणात्मक नहीं है। शब्दों के अर्थ समय, संदर्भ और स्वर के आधार पर बदल जाते हैं क्योंकि स्वयं मनुष्य भी भाषा का उपयोग करने के तरीके में सुसंगत नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि एमटी वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन, विशेष रूप से मैनुअल, और यहां तक कि कानूनी दस्तावेजों और पेटेंट के साथ सर्वोत्तम परिणाम प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, किसी भी पाठ के साथ जो सूत्रों का अधिक सख्ती से पालन करता है। यह आज इन क्षेत्रों में व्यापक रूप से तैनात है, और एमटी का महत्व निर्विवाद है। EHLION उन सभी क्षेत्रों में विशेषज्ञ है और तकनीकी दस्तावेज, पेटेंट अनुवाद, मैनुअल अनुवाद सेवाएं प्रदान करता है। यहाँ, मानवीय अनुवाद अभी भी शीर्ष पर आते हैं और संभवतः हमेशा रहेंगे । एक अन्य महत्वपूर्ण कारक प्रत्येक मामले में विशिष्ट भाषा संयोजन है, क्योंकि स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के आधार पर आउटपुट गुणवत्ता में काफी भिन्नता हो सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि संबंधित भाषाओं की संरचना और व्याकरण एक भूमिका निभाते हैं, जैसा कि द्विभाषी टेक्स्ट की उपलब्ध मात्रा और गुणवत्ता के साथ अनुवाद एल्गोरिदम को प्रशिक्षित किया जाता है । अंत में, आउटपुट की गुणवत्ता भी विषय क्षेत्र से प्रभावित होती है क्योंकि निश्चित भाषा संयोजनों में स्पष्ट रूप से केवल बहुत कम उच्च गुणवत्ता वाली द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध है ।

मशीनी अनुवाद में किसी पाठ के सार को समझने के लिए या मानव–गुणवत्ता वाले अनुवाद के शुरुआती बिंदु के रूप में इसका उपयोग करें । यदि आपको पूरी तरह से सटीक, उच्च–गुणवत्ता वाले अनुवाद की आवश्यकता है, तब भी पाठ को एक कुशल पेशेवर अनुवादक द्वारा संशोधित करने की आवश्यकता है । इनपुट निम्नलिखित स्वरूपों को स्वीकार करता है: -txt, -doc, -docx, -odt,-ott, -rtf, -xls, -xlsx, -ods, -ots, -ppt, -pptx, -odp, -otp, -odg, -otg, -htm, -html, -xhtml, -h, -xml, -xlf, -xliff, -sdlxliff, -rdf, -tmx vkSj pdf आदि । और एक बार में कई

दस्तावेजों का कई भाषाओं में अनुवाद कर सकता है । यह आपके मूल दस्तावेज का प्रारूप रखता है (पीडीएफ को छोड़कर, जो डॉक्स के रूप में लौटाता है) ।

8. निष्कर्ष:

भविष्य में मशीनी अनुवाद कई भाषा सेवा प्रदाता आजकल किसी प्रकार के अनुवाद कार्यक्रम को तैनात करते हैं और परिणामों को बेहतर बनाने के लिए आउटपुट को मानव अनुवादकों या संपादकों द्वारा संशोधित किया जाता है, जिसे 'पोस्ट–एडिटर्स' कहा जाता है। इस प्रक्रिया को एमटी पोस्ट–एडिटिंग (एमटीपीई) कहा जाता है। स्वाभाविक रूप से, मानव अनुवाद की तुलना में स्वचालित कार्यक्रमों का उपयोग करने के लिए लागत कम है, लेकिन मानव पुनरीक्षणकर्ता के साथ संयुक्त नहीं होने पर निस्संदेह निम्न गुणवत्ता है। भाषा अत्यधिक गतिशील और जटिल है, और जबकि मशीनी अनुवाद तकनीक में पिछले कुछ वर्षों में बहुत सुधार हुआ है, यह कभी भी प्रत्येक भाषा की बारीकियों को उनकी संपूर्णता में सटीक रूप से पहचानने और उन्हें मानव अनुवादक की तरह दूसरी भाषा में संप्रेषित करने में सक्षम होने की संभावना नहीं है। अगले दशक की ओर देखते हुए, मशीनी अनुवाद कार्यक्रमों को क्राउडसोर्स किए गए अनुवादों और मशीन–अनुवादित आउटपुट की समीक्षाओं से उन उपयोगकर्ताओं को काफी लाभ होगा, जो, उदाहरण के लिए, अनुवादों को मैन्युअल रूप से सुधार या रेट कर सकते हैं । भविष्य में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीनी अनुवाद (एमटी) का उपयोग व्यापार क्षमता और संचालन को और बेहतर बनाने के लिए किया जाएगा। परिणाम कम संसाधनों का उपयोग करने वाले और व्यवसाय के लिए लाभप्रदता में सुधार करते हुए कम लागत वाले अनुवाद वर्कफ्लोज का तेज और अधिक बुद्धिमान निष्पादन होगा ।

भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द बनाना है

पवन कुमार सूरज

अपने दैनिक कामकाज में, हिन्दी चलन चलाना है।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

ए बी सी डी के चक्कर में, क्यों क ख ग घ को छोड़ा है?
अंग्रेजी के आकर्षण में, हिन्दी से मुख मोड़ा है।।
धीरे–धीरे करके सबने, इससे नाता तोड़ा है।
सबको विकास रस्ते पे क्यों, हिन्दी लगती रोड़ा है।।
पश्चिम की इस परिपाटी का, चलो समूल मिटाना है।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

अंग्रेजी में लिखने पढने का, शौक सभी ने पाला है।
अंग्रेजी सबसे अच्छी क्यों? जपते सब यह माला है।।
अंग्रेजी स्कूली कल्चर अब, पढ़ते बालक बाला है।
हाय बाय की गंदी लत ने, नमस्कार तज डाला है।।
इन अंग्रेजी के महलों का, मिलकर चूल हिलाना है।।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

सिर्फ अपने मतलब के हेतु, हिन्दी को अपनाते हम।
बस पुरस्कार के लालच में, आयोजन करवाते हम।।
अंग्रेजी के दाँतों से कट, हिन्दी को चाब खाते हम।
पूर्ण वर्ष अंग्रेजी की जय, कुछ दिन हिंदी गाते हम।।
हिन्दी जिससे पनपे हर इक, वो कदम उठाना है।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

कितनी प्यारी भाषा हिन्दी, न्यारी जग से बोली है।
शब्दों का है भण्डार भरा, नौ रस की शुभ टोली है।।
भारत के माथे की बिंदी, माँगलिक तिलक रोली है।
जैसा वाचन वैसा लेखन, यह वैज्ञानिक गोली है।।
हिन्दी के गाँवों में चलिए, जीवन बड़ा सुहाना है।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

छोड़कर खोखले दावों को, अब आगे बढ़ना होगा।
हिन्दी शीर्ष पे पहुँच पाए, कोई हल करना होगा।।
हिन्दी बने अब राष्ट्रभाषा, उपाय नव गढ़ना होगा।
भारत के हर विद्यालय में, हिन्दी को भरना होगा।।
'सूरज' हिन्दी को अपनाकर, आगे देश बढ़ाना है।
भारत की प्यारी हिन्दी को, गौरव हिन्द–बनाना है।।

पुरस्कार सूची: वर्ष 2023 -24

(दिनांक 28 सितम्बर 2023 को 'हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' के अवसर पर वितरित पुरस्कार)

वर्ष 2022–2023 के दौरान सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाले विभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करना

प्रशासन विभाग

को आगामी एक वर्ष हेतु 'राजभाषा चल शील्ड' प्रदान की गई।

त्रिलोक सिंह

सर्वाधिक श्रुतलेख (डिक्टेशन) हिन्दी में देने के लिए नकद प्रोत्साहन पुरस्कार

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1	श्रीमती रूमा ढाका, वै–जी	रु. 2500/–
2	श्री पुनीत वाशिष्ठ, वै–जी	रु. 2500/–
3	श्री गिरिराज, वै.एफ	रु. 2500/–
4	श्री हितेश कुमार, मु.प्र.अ.प्रशा.	रु. 2500/–

वर्ष 2022 – 23 के दौरान मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु नकद प्रोत्साहन पुरस्कार

तकनीकी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती रश्मि रावत, व.त.स.– बी	प्रथम 5000/–
2.	श्री कृष्ण प्रताप सिंह, तकनी.–सी	द्वितीय 3000/–
3.	श्री देवी लाल, व.त.स.–बी	तृतीय 2000/–
4.	श्री विपिन सिंह गुसाईं, व.त.स.–बी	तृतीय 2000/–
5.	श्री अनूप कुमार थापा, तकनी.–सी	तृतीय 2000/–

गैर तकनीकी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री विजय सिंह,डी.ई.ओ.–डी	प्रथम 5000/–
2.	कु. एकता,प्रशा.सहायक–ए	द्वितीय 3000/–
3.	श्रीमती शिवानी रावत, प्रशा.सहायक–बी	द्वितीय 3000/–
4.	श्रीमती सुनीता देवी, प्रशा.सहायक–बी	तृतीय 2000/–
5.	श्रीमती नीना राणा, एम.टी.एस.	तृतीय 2000/–

वर्ष 2022–23 में राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिन्दी पत्राचार में विशेष योगदान हेतु नकद प्रोत्साहन पुरस्कार

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री जयपाल सिंह, त .अ.– बी	500/–
2.	श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.–बी	500/–
3.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–ए	500/–
4.	श्री सुनील चन्द्र पुरोहित, त.अ.–बी	500/–
5.	श्री अनिल कुमार, भण्डार सहायक–बी	500/–
6.	श्रीमती विश्वेश्वरी देवी, एम.टी.एस.	500/–
7.	श्रीमती गिरजेश देवी, एम.टी.एस.	500/–
8.	श्री अजय प्रसाद, तकनीशियन–बी	500/–

शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता, 19 सितम्बर, 2023

वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–ए	प्रथम, 1000/–
2.	श्री रविन्द्र सिंह, त.अ.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री सचिन कुमार धीमान, त.अ.–बी	तृतीय, 600/–

शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता, 19 सितम्बर, 2023

वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री सागर कुमार, व.त.स.–बी	प्रथम, 1000/–
2.	कु. राखी गुप्ता, व.त.स.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री संतोष कुमार, व.त.स.–बी	तृतीय, 600/–

टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, 19 सितम्बर, 2023

वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अनुज कुमार रुहेला, त.अ.–ए	प्रथम, 1000/–
3.	श्री रविन्द्र सिंह, त.अ.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री रोहित कुमार,त.अ.–ए	तृतीय, 600/–

टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, 19 सितम्बर, 2023

वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री आशुतोष कुमार, तकनीशियन–बी	प्रथम, 1000/–
2.	श्री सुनील पाल, एल.एफ.एम.	द्वितीय, 800/–
3.	श्री रितेश राना, एल.एफ.एम.	तृतीय, 600/–

हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता, 20 सितम्बर, 2023

वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री सुबोध कुमार, त.अ.–बी	प्रथम, 1000/–
2.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–ए	द्वितीय, 800/–
3.	श्री संदीप कुमार यादव, त.अ.–बी	तृतीय, 600/–
	सुश्री पूनम रानी, त.अ.–सी	तृतीय, 600/–

हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता, 20 सितम्बर, 2023
वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री ललित कुमार पाल, व.त.स.–बी	प्रथम, 1000/–
2.	सुश्री प्रियंका सिंह, व.त.स.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री रितेश राना, एल.एफ.एम.	तृतीय, 600/–

हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख तथा टिप्पण प्रतियोगिता 20 सितम्बर, 2023
शासी परिषद के सदस्यों (ग्रुप निदेशकों/विभागाध्यक्षों) हेतु

पुरस्कार	नाम व पदनाम	रुपये
प्रथम	डॉ. पंकज श्रीवास्तव, वैज्ञानिक–एफ	1000/–
द्वितीय	श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक – जी	800/–
तृतीय	श्री अमित कुमार, वैज्ञानिक –एफ	600/–

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता 21 सितम्बर,2023
वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री एस.के. धीमान, त.अ.–बी	प्रथम, 1000/–
2.	श्री सुबोध कुमार, त.अ.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.–बी	तृतीय, 600/–
	श्री रविन्द्र सिंह, त.अ.–बी	तृतीय, 600/–

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता 21 सितम्बर,2023
वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	कु. सुधा, तकनी.–ए	प्रथम, 1000/–
2.	श्री विक्की कुमार, तकनी.–ए	द्वितीय, 800/–
3.	कु. प्रीति कुमारी, व.त.स.–बी	तृतीय, 600/–

व्याख्यान प्रतियोगिता – 21 सितम्बर, 2023
वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अनुज कुमार रुहेला, त.अ.–ए	प्रथम, 1000/–
2.	श्री सुबोध कुमार, त.अ.–बी	द्वितीय 800/–
3.	श्री एस.एस. धोनी, वैज्ञानिक–ई	तृतीय 600/–

व्याख्यान प्रतियोगिता – 21 सितम्बर, 2023
वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	कु. सुधा, तकनी.–ए	प्रथम,1000/–
2.	कु. अन्नु कुमारी तकनी.–ए	द्वितीय 800/–
3.	श्री सुमित पौद्दार तकनी.–ए	तृतीय, 600/–

कविता पाठ प्रतियोगिता – 22 सितम्बर, 2023
वर्ग 1 – अधिकारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती आर्निका सोनी त. अ.–ए	प्रथम, 1000/–
2.	श्री सुन्दर सिंह धोनी, वैज्ञानिक–ई	द्वितीय, 800/–
3.	कु. पूजा, वैज्ञानिक–ई	तृतीय, 600/–

कविता पाठ प्रतियोगिता – 22 सितम्बर, 2023
वर्ग 2 – कर्मचारी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री सुमित पौद्दार, तकनीशियन–ए	प्रथम, 1000/–
2.	कु. प्रीति कुमारी, व.त.स.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री नरेन्द्र कुमार, व.त.स.–बी	तृतीय, 600/–

कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी टंकण प्रतियोगिता 25 सितम्बर, 2023
तकनीकी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री अनुज कुमार, रुहेला त.अ.–ए	प्रथम, 1000/–
2.	श्री सुबोध कुमार, त.अ.–बी	द्वितीय, 800/–
3.	श्री ललित कुमार, त.अ.–ए	तृतीय, 600/–

कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी टंकण प्रतियोगिता 25 सितम्बर, 2023
गैर–तकनीकी वर्ग

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती रेनु सिंह, निजी सचिव वी.आई	प्रथम, 1000/–
2.	श्री विकास खरोला, व.भ.सहायक	द्वितीय, 800/–
3.	कु. एकता, प्रशा.सहा.–ए	तृतीय 600/–

प्रश्न मंच प्रतियोगिता – 26 सितम्बर, 2023

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री राजेश कुमार सेन, त.अ.– बी	100/–
2.	कु. राखी गुप्ता, व.त.स.– बी	100/–
3.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–ए	100/–
4.	श्री विक्की कुमार, तक. – ए	100/–
5.	कु. प्रीति कुमारी, व.त.स.–'बी	100/–
6.	श्री सुमित पोद्दार, तक.–ए	100/–
7.	श्री सचिन कुमार धीमान, त.अ.–बी	100/–
8.	कु.सुचिता गुलाटी, वै.बी	200/–
9.	श्री विवेक गोयल, वै. सी	100/–
10.	कु. अन्नु कुमारी, तक.–ए	100/–
11.	श्री विनीत तिवारी, त.अ.–सी	100/–
12.	कु. प्रियंका चौरे, तक.–ए	100/–
13.	कु. शिवानी झा, व.त.स.–बी	100/–
14.	श्री शुभम गुप्ता, तक.–ए	100/–
15.	श्री अनुज रुहेला, त.अ.–ए	200/–
16.	श्री अर्पण माझी, व.त.स.–बी	100/–
17.	श्री अरुण कुमार, तक.–बी	100/–
18.	कु. सुधा, तक. ए	100/–
19.	श्री नरेन्द्र कुमार, व.त.स.–बी	100/–
20.	श्री योगेश कुमार सक्सेना, वै.–ई.	100/–
21.	श्री सोनू कुमार, त.अ.–ए	200/–
22.	श्री अशोक कुमार, त.अ.–बी	100/–
23.	श्री हितेश कुमार, मु.प्र.अ.	100/–
24.	कु. प्रियंका सिंह, व.त.स.–बी	100/–
25.	डॉ. अनिल कुमार, वै.ई	100/–
26.	श्री सुरेन्द्र सिंह गर्ब्याल, त.अ.–ए	100/–
27.	श्री आशुतोष, तक– बी	100/–
28.	कु. सुनीता पाल, व.त.स.–बी	100/–
29.	श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.–बी	100/–
30.	श्री सुनील पाल, ली.फायरमेन	100/–

प्रश्न मंच प्रतियोगिता – 26 सितम्बर, 2023

31.	सुश्री सुभद्रा कुमारी,त.अ.–ए	100/
32	श्री रंजीत कुमार, त.अ.–बी	100/–
33.	श्री आशुतोष सक्सेना, त.अ.–सी	100/–
34.	श्री शशांक जोशी, वै.–सी	100/–
35.	श्री ललित पाल, व.त.स.–बी	100/–
36.	श्री रवीन्द्र कुमार मण्डल, तक.–ए	100/–
37.	श्रीमती गिरजेश देवी, एम.टी.एस.	100/–
38.	श्रीमती नम्रता जोशी, त.अ.–बी	100/–
39.	श्रीमती मोनिका टंडन, त.अ.–सी	100/–
40.	कु.दर्शिका द्विवेदी, व.त.स.–बी	100/–
41.	श्री कुलवंत सिंह, व.त.स.–बी	100/–
42.	श्री मधुसूदन उपाध्याय, त.अ.–सी	100/–
43.	श्री राजेन्द्र सिंह, स.श्र.क.आ.	100/–
44.	श्री टी.के.भारद्वाज, व.ले.अ.	100/–
45.	श्रीमती सुदेश सैनी, प्र.स.–ए	100/–
46.	श्रीमती जमना, तक.–बी	100/–
47.	श्री सुरेन्द्र कुमार, त.अ.–बी	100/–
48.	श्री सुरेन्द्र सिंह, एस.ए.–बी	100/–
49.	श्री रवीन्द्र सिंह, त.अ.–बी	100/–

सांस्कृतिक कार्यक्रम वन्दना,गीत एवं हास्य प्रस्तुति हेतु नकद प्रोत्साहन पुरस्कार

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्रीमती मोनिका टंडन, तक. अधि.–सी	रु. 500/–
2.	श्रीमती रितु रोहिला, तक.अधि.–बी	रु. 500/–
3.	श्रीमती आर्निका सोनी, तक.अधि.–बी	रु. 500/–
4.	कु. शिल्पा खलखो, तक.अधि.–ए	रु. 500/–
5.	कु. सुमन दास, जे.आर.एफ.	रु. 500/–
6	श्री सचिन तिवारी, व.त.स.–बी	रु. 500/–

लघु नाटक 'रस्सी का सांप' की प्रस्तुति हेतु नकद प्रोत्साहन पुरस्कार

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री पी.के. शर्मा, वैज्ञानिक–जी	500/–
2.	श्री एस.एस. धोनी, वैज्ञानिक–ई	500/–
3.	श्री एम.पी. सिंह, वैज्ञानिक–ई	500/–
4.	श्री अमित कुमार, त.अ. दृ सी	500/–
5.	श्री नवीन तमोली, तक.सहायक–बी	500/–
6.	श्री सचिन कुमार तिवारी, व.त.स.–बी	500/–
7.	श्री ललित कुमार पाल, व.त.स.–बी	500/–
8.	श्री रितेश राना, एल.एफ.एम.	500/–
9.	श्री सुनिल पाल, एल.एफ.एम.	500/–
10.	श्री प्रवीण कुमार, त.अ.–बी	500/–
11.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–ए	500/–
12.	कु. सुधा, तकनीशियन–ए	500/–
13.	कु. अन्नु कुमारी, तकनीशियन–ए	500/–
14.	कु. प्रियंका चौरे, तकनीशियन–ए	500/–
15.	श्री विवेक राणा, त.अ.–ए	500/–
16.	श्री एस.सी. श्रीवास्तव, से.नि. वै.ई	500/–
17.	श्री सन्दीप नायक, त.अ.– ए	1000/–

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यक्रमों के आयोजन में विशेष सहयोग हेतु नकद प्रोत्साहन पुरस्कार–2023

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	सुश्री केतिका ढींगरा, पी.एस.	200/–
2.	श्री वाई.एस. बरार, त.अ.–बी	200/–
3.	श्री रविन्द्र कण्डारी, त.अ.–बी	200/–
4.	श्री नरेन्द्र कुमार, व.त.स.–बी	200/–
5.	श्री सुखपाल सिंह, त. अ.	200/–
6.	श्री बीरेन्द्र सिंह भण्डारी, त.अ.–ए	200/–
7.	श्री डी.के. गोदियाल, व.सु.सहायक	200/–
8.	श्री राकेश चौधरी, तकनीशियन–ए	200/–
9.	श्री अतर सिंह, त.अ.–बी	200/–
10.	श्री परेश भण्डारी, त.अ.–बी	200/–
11.	श्री आशीष भण्डारी, तकनीशियन–बी	200/–
12.	कु. प्रीति कुमारी, व.त.स.–बी	200/–
13.	कु. एकता, प्रशासन सहायक–ए	200/–
14.	श्री पवन कुमार भैनवाल, तकनीशियन–बी	200/–
15.	श्री गिरधारी लाल, कुक	200/–
16.	श्री जितेन्द्र कुमार यादव, कुक	200/–
17.	श्री राजेश कुमार, त.अ.–डी	200/–

हिन्दी प्रतियोगिता निर्णायक, मूल्यांकन कर्ता, उत्तर पुस्तिका जाँच कर्ता, अन्वीक्षक तथा संचालन कर्ता : विशेष नकद प्रोत्साहन पुरस्कार–2023

क्र.	नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक–जी	500/–
2.	श्रीमती नीता काण्डपाल, वैज्ञानिक–जी	500/–
3.	श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक–जी	500/–
4.	श्री विपिन कुमार शर्मा, वैज्ञानिक–जी	500/–
5.	डॉ. पंकज श्रीवास्तव, वैज्ञानिक–एफ	500/–
6.	डॉ. ए.के.साहनी, वैज्ञानिक–एफ	500/–
7.	श्री अमित कुमार, वैज्ञानिक–एफ	500/–
8.	श्री एम.के.मथुरिया, वैज्ञानिक–एफ	500/–
9.	डॉ. सुमन अवस्थी, वैज्ञानिक–एफ	500/–
10.	डॉ. प्रभात शर्मा, वैज्ञानिक–ई	500/–
11.	श्री एम.पी.सिंह,वैज्ञानिक–ई	500/–
12.	श्री योगेश सक्सेना, वैज्ञानिक–ई	500/–
13.	श्री नरेश पालीवाल, वैज्ञानिक–डी	500/–
14.	श्री शशांक जोशी, वैज्ञानिक–सी	500/–
15.	सुश्री सुचिता गुलाटी, वैज्ञानिक–बी	500/–
16.	श्री हितेश कुमार, मु.प्र.अ.	500/–
17.	श्री टी.के. भारद्वाज, व.लेखा अधिकारी	500/–
18.	श्रीमती मोनिका टंडन, त.अ.–सी	500/–
19.	श्री ध्यान सिंह मेहरा, भण्डार अधिकारी	500/–
20.	श्री ए.के.ढौंडियाल, भण्डार अधिकारी	500/–
21.	श्रीमती रितु रोहिला, त.अ.–बी	500/–
22.	श्री ओमकार क्षेत्री, त.अ.–बी	500/–
23.	श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ.	500/–
24.	श्री हरेन्द्र गुसाईं, त.अत्र–बी	500/–
25.	श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.–बी	500/–
26.	श्रीमती आर्निका सोनी, त.अ.–बी–ए	500/–
27.	श्री देवी लाल, व.त.स.–बी	500/–

'संकल्प' पत्रिका अंक 34 - वर्ष 2022-23 तथा तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक 2, वर्ष 2022-23

पुरस्कार सूची

उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख
एन.क्यू.आर.तकनीक द्वारा विस्फोटन संसूचन
श्री कमल कुमार गुलाटी, 800/–

उत्कृष्ट साहित्यिक लेख
देश के सांस्कृतिक विकास में हिन्दी का योगदान
श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ., 800/–

उत्कृष्ट कविता
मैं एक मौन हूँ
श्री राकेश मोहन रावत, तक. अधिकारी–सी, 800/–

मुखपृष्ठ अभिकल्पन एवं फोटो संयोजन
श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ.

कार्यालयीन प्रक्रिया कार्य
श्री देवी लाल, व.त.स., 800/–

लेखक एवं रचनाकार
'संकल्प' पत्रिका अंक 33, तथा 'संकल्पः तकनीकी पत्रिका अंक –2 वर्ष 2022 – 2023
प्रोत्साहन पुरस्कार (नकद पुरस्कार रु. 200/– प्रत्येक)

1. श्री सुनील कुमार, तकनीकी अधिकारी–ए
   पुस्तकालय विज्ञान में डॉ. रंगनाथन का योगदान
2. श्रीमती आर्निका सोनी, तक.अधिकारी–ए
   1. रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की सहभागिताः एक विश्लेषण
   2. लेजर आधारित अल्टीमीटर
3. श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ.
   1. संस्थान में अतिविशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण
   2. संस्थान की विभिन्न गतिविधियां
   3. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
   4. संस्थान के स्थापना दिवस 18 फरवरी 2022 एवं वार्षिक खेलकूद दिवस के परिदृश्य
   5. संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन(वार्षिक प्रतिवेदन–2022)
   6. संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा 2022 की झलकियां
   7. पुरस्कार सूची – 2022–23
   8. संस्थान में नियुक्तियां, पदोन्नतियां, स्थानान्तरण,सेवानिवृत्तियां वर्ष 2022
   9. निज भाषा उन्नति अहै (संकलन)
   10. हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2022 को पुरस्कार वितरण
4. श्री हरविन्दर कुमार, तकनीकी सहायक–बी
   तकनीकी शिक्षा
5. श्री कुलवन्त सिंह, व.त.स.–बी
   1. प्यास और पानी (सा.लेख)
   2. 5जी (तकनीकी लेख)
6. श्री विपिन कक्कड, तकनीकी अधिकारी –
   1. सफलता के मूल मंत्र
   2. वर्ग पहेली
   3. हिन्दी पखवाड़ा (कविता)
   4. जंक्शन फील्ड इफेक्ट ट्रांजिस्टर (जेकेट) की पिच ऑफ क्षेत्र में कार्यप्रणाली (तक.लेख)
7. श्री पवन कुमार सूरज, तकनीकी अधिकारी–बी
   1. 'हाय' लघु कथा,
   2. हर घर, हर छत चलो तिरंगा, लहर–लहर फहराना है (कविता)
   3. मिश्रित मोड कंपन परीक्षण
8. श्री मधुसूदन उपाध्याय, तक. अधिकारी–सी
   हंसिकाएः हंसना मना है
9. श्री सुन्दर सिंह धोनी, वैज्ञानिक–डी
   स्वच्छता (कविता)
10. श्री प्रीतपाल सिंह डढियाला, तक. अधिकारी
    देहरादून (कविता)
11. कु. रक्षिता उपाध्याय सुपुत्री श्री मधुसूदन उपाध्याय
    माँ, मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ (कविता)
12. श्री योगेश कुमार सक्सेना, वैज्ञानिक–डी
    खूब सूरती पेडों की (कविता)
13. श्रीमती रूचि उपाध्याय धर्मपत्नी श्री मधुसूदन उपाध्याय
    माँ ईश्वर की सर्वोत्तम रचना
14. श्री राघव उपाध्याय सुपुत्र श्री मधुसूदन उपाध्याय
    देश के खातिर (कविता)
15. श्रीमती पूर्णिमा गर्ग, तकनीकी अधिकारी–बी
    कुछ अनकहा (कविता)
16. श्रीमती अनुराधा शर्मा, धर्मपत्नी श्री विपिन शर्मा, वै.जी
    मैंने देखा है ....
17. श्री अरविन्द बंसल,
    कागज और पेड़
18. श्रीमती वन्दना राय धर्मपत्नी श्री कृष्ण मुरारी
    दोस्त
19. श्री देवी लाल, व.त.स.–बी
    1.सब अपने हैं 'मैं' दुश्मन(कविता),
    2.वर्षा रानी (कविता)
20. श्री मंजु धस्माना, तकनीकी अधिकारी–बी
    1.काश (कविता) 2. दुनिया (कविता)
21. श्री राकेश मोहन रावत, तक. अधिकारी–सी
    गजल
22. श्रीमती रितु रोहिला, तकनीकी अधिकारी–बी
    साइबर क्राइम (तकनीकी लेख)
23. श्री प्रकाश घनसेला, तकनीकी अधिकारी–सी
    एंटीक टेलिस्कोप की प्रतिबिम्ब गुणवत्ता संशोधन एवं मापन
24. श्री रामप्रकाश नौटियाल, वैज्ञानिक – ई
    आत्मनिर्भर भारत में डीआडीओ द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी का योगदान (तक.लेख)
25. श्री शशांक जोशी, वैज्ञानिक–सी
    कैमॉप–आठों प्रहर का प्रहरी
26. डॉ. अनिल कुमार – वैज्ञानिक – ई
    निर्वात : आधुनिक प्रकाशीय घटकों की कोटिंग में महत्त्व
27. श्री आनन्द शंकर उपाध्याय, वैज्ञानिक – ई
    कॉम्पेक्ट इलैक्ट्रो – ऑप्टीकल उपकरण हेतु द्विवर्णी कोटिंग
28. श्री नीरज पाण्डेय, वैज्ञानिक – ई
    प्रकाशीय फेज मापन की विधियां

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक –34 वर्ष 2022–23
तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक –2 वर्ष 2022–23
सम्पादक मण्डल

क्र.	नाम एवं पदनाम	सम्पादक मण्डल	रुपये
1.	श्री पुनीत वाशिष्ठ, वै.–जी	प्रधान सम्पादक	500/–
2.	डॉ. ललित मोहन पन्त, वै.–एफ,	सम्पादक	500/–
3.	श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ.	सदस्य	500/–
4.	श्री पवन कुमार सूरज, त. अ–बी	सदस्य	500/–
5.	श्री अनिल शर्मा, भ. अ.	सदस्य	500/–
6.	श्री वाई .एस. बरार, त. अ.–बी	सदस्य	500/–

भारतेंदु हरीशचंद्र के विचार

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल

अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषाज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय।
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय।।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्यैहैं सोय।
लाख उपाय अनेक यों भले करो किन कोय।।

इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।।

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय।
यह गुन भाषा और महं, कबहूँ नाहीं होय।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।।

सब मिल तासों छाँड़ि कै, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करहु, अहो भातगन आय।।

संस्थान में नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ, स्थानान्तरण, सेवानिवृत्तियाँ–वर्ष 2023

संकलनकर्ता– त्रिलोक सिंह

संस्थान में नियुक्तियाँ

01 जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(सुस्वागतम)

क्र.	नाम	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	श्री अतुल चौहान	व.त.स.–बी	15.03.2023
2.	श्री चन्दन कुमार	व.त.स.–बी	17.03.2023
3.	श्री परीक्षित घोष	व.त.स.–बी	17.03.2023
4.	श्री राकेश पटेल	व.त.स.–बी	17.03.2023
5.	कु. दर्शिता द्विवेदी	व.त.स.–बी	20.03.2023
6.	श्री दिगम्बर	व.त.स.–बी	20.03.2023
7.	श्री अरबिन्द कुमार	व.त.स.–बी	20.03.2023
8.	कु. सुनीता पाल	व.त.स.–बी	21.03.2023
9.	श्री हर्षित सिंह	व.त.स.–बी	21.03.2023
10.	श्री सन्नी देव	व.त.स.–बी	21.03.2023
11.	श्री विनीत कुमार पाण्डेय	व.त.स.–बी	21.03.2023
12.	कु. प्रीति कुमारी	व.त.स.–बी	24.03.2023
13.	कु. शिवानी झा	व.त.स.–बी	27.03.2023
14.	श्री नितिन अग्रवाल	व.त.स.–बी	27.03.2023
15.	कु. प्रियंका सिंह	व.त.स.–बी	29.03.2023
16.	श्री मनारंजन प्रमाणिक	व.त.स.–बी	29.03.2023
17.	श्री विष्णु आर.	व.त.स.–बी	31.03.2023
18.	श्री जयदेव पाल	व.त.स.–बी	31.03.2023
19.	कु. गुण्डेवार प्रणाली	व.त.स.–बी	03.04.2023
20.	श्री अभिषेक जायसवाल	व.त.स.–बी	03.04.2023
21.	श्री सचिन तिवारी	व.त.स.–बी	03.04.2023
22.	श्री सौरभ खट्टी	व.त.स.–बी	03.04.2023
23.	श्री दिनेश मीणा	व.त.स.–बी	17.04.2023
24.	श्री बाल मुकुन्द	व.त.स.–बी	24.04.2023
25.	श्री मलखे जाटव	तकनीशियन–ए	13.06.2023
26.	श्री जितेन्द्र कुमार	तकनीशियन–ए	13.06.2023
27.	श्री मोहित	तकनीशियन–ए	13.06.2023
28.	श्री राहुल	तकनीशियन–ए	13.06.2023
29.	श्री राकेश चौधरी	तकनीशियन–ए	13.06.2023
30.	श्री कुमार आशुतोष	तकनीशियन–ए	13.06.2023
31.	श्री प्रहलाद सिंह यूकै	तकनीशियन–ए	13.06.2023
32.	श्री राजेश कुमार सिंह	तकनीशियन–ए	13.06.2023
33.	श्री अनिल कुमार मीणा	तकनीशियन–ए	13.06.2023
34.	कु. सुधा	तकनीशियन–ए	13.06.2023
35.	श्री दीन दयाल शर्मा	तकनीशियन–ए	13.06.2023
36.	श्री रोहित कुमार	तकनीशियन–ए	13.06.2023
37.	श्री धनेश कुमार सैनी	तकनीशियन–ए	13.06.2023
38.	श्री अमित	तकनीशियन–ए	13.06.2023
39.	श्री नीरज	तकनीशियन–ए	13.06.2023
40.	श्री श्रवण	तकनीशियन–ए	13.06.2023
41.	श्री सतीवडा सुरेश	तकनीशियन–ए	20.06.2023
42.	श्री रविन्द्र कुमार मण्डल	तकनीशियन–ए	20.06.2023

43.	कु. प्रियंका चौरे	तकनीशियन–ए	20.06.2023
44.	कु. अन्नु कुमारी	तकनीशियन–ए	21.06.2023
45.	श्री राधेश्याम करमेकर	तकनीशियन–ए	23.06.2023
46.	श्री कैलाश चन्द्र सैनी	तकनीशियन–ए	26.06.2023
47.	श्री नवीन	वी.ओ.–ए	21.08.2023
48.	श्री साहिल छिल्लर	वी.ओ.–ए	21.08.2023
49.	श्री लाखन मीणा	वी.ओ.–ए	21.08.2023
50.	श्री राहुल कुमार मीणा	वी.ओ.–ए	21.08.2023
51.	श्री आनन्द कुमार	व.त.स.–बी	12.09.2023
52.	श्री तरुण बिष्ट	वैज्ञा.– बी	13.10.2023
53.	श्री अमन कुमार	वैज्ञा.– बी	26.10.2023
54.	श्री प्रबल सिंह	सु.स.–ए	16.10.2023
55.	श्रीमती सन्जु	सु.स.–ए	30.10.2023
56.	श्री प्रियब्रत दास	वैज्ञा.–बी	01.11.2023
57.	श्री अमित कुमार पटेल	क.अनु.अ.	07.11.2023
58.	श्री सचिन	प्र.स.–ए	04.12.2023
59.	श्री मनजीत	प्र.स.–ए	05.12.2023
60.	श्री दीपक कुमार	प्र.स.–ए	05.12.2023
61.	श्री अंकित	प्र.स.–ए	07.12.2023
62.	श्री हिमांशु टमटा	प्र.स.–ए	11.12.2023
63.	श्री पवन यादव	प्र.स.–ए	26.12.2023
64.	श्री नितिन कुमार	भ.स.–ए	06.12.2023

संस्थान में पदोन्नतियाँ

01 जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(बधाई)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
65.	श्रीमती सुनीता देवी	व.प्र.स.	02.01.2023
66.	श्री मुकेश कन्नोजिया	वी.ओ.–बी	02.01.2023
67.	श्री पवन कुमार	वी.ओ.–बी	02.01.2023
68.	श्री सुनील कुमार	वी.ओ.–बी	09.01.2023
69.	श्री उमेश कुमार	प्रशा.अधिकारी	20.02.2023
70.	श्री हरविन्द्र कुमार	त.स.–बी	03.03.2023
71.	डॉ. अजय कुमार	वैज्ञा.एच, (उ. वैज्ञा.)	25.07.2023
72.	श्री नीरज भार्गव	वैज्ञा.एच, (उ. वैज्ञा.)	25.07.2023
73.	श्री आनन्द कुमार गुप्ता	वैज्ञा.– जी	06.07.2023
74.	श्री प्रदीप शंखवार	वैज्ञा.– जी	20.07.2023
75.	श्री संजय कुमार मिश्रा	वैज्ञा.–जी	20.07.2023
76.	श्री ओम प्रकाश नरेनिया	वैज्ञा.– एफ	01.07.2023
77.	श्री आशीष कुमार भूरिया	वैज्ञा.–एफ	01.07.2023
78.	श्री सुनील कुमार	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
79.	श्री जगदीश सिंह रावत	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
80.	श्री राम प्रकाश नौटियाल	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
81.	श्री सुन्दर लाल बारवर	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
82.	श्री नितिन रंजन	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
83.	श्री हिरेन्द्र सिंह	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
84.	श्रीमती स्मिता शर्मा	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
85.	श्रीमती दिव्या गौतम	वैज्ञा.– ई	01.07.2023
86.	श्री हर्षप्रीत सिंह भाटिया	वैज्ञा.– डी	01.07.2023
87.	श्रीमती दुर्गेश भट्ट	व.प्र.अ.– I I	31.08.2023
88.	श्री अनुज वर्मा	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
89.	श्री गिरिराज प्रसाद	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
90.	श्री बिनोद कुमार	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
91.	श्री हनुमान प्रसाद अग्रहरि	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
92.	श्री आशीष थपलियाल	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
93.	श्री आकाश सिंह	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
94.	डॉ. अमित कुमार अग्रवाल	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
95.	श्री सौरभ वर्मा	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
96.	श्री विमल कान्त मिश्रा	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
97.	श्री मुनीष कुमार	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
98.	श्री अभिजीत चक्रवर्ती	वैज्ञा.–एफ	06.09.2023
99.	श्री अनमोल राणा	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
100.	श्री नितेश कुमार	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
101.	श्री सुन्दर सिंह धोनी	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
102.	श्री निर्मल कुमार	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
103.	श्री योगेश कुमार सक्सेना	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
104.	कु पूजा	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
105.	श्रीमती हेम शिखा	वैज्ञा.–ई	06.09.2023
106.	श्री बिजयेन्द्र कुमार	वैज्ञा.–ई	11.09.2023
107.	श्री सन्दीप कुमार	वैज्ञा.–डी	06.09.2023
108.	श्री विवेक गोयल	वैज्ञा.–सी	06.09.2023
109.	श्री हरि सिंह राना	त.अ.– डी	01.09.2023
110.	श्री विनय कुमार जैन	त.अ.– डी	01.09.2023
111.	श्री टी.एस. तोमर	त.अ.– डी	01.09.2023
112.	श्री सन्दीप वडाडर	त.अ.– सी	01.09.2023
113.	श्री सत्यवीर गौतम	त.अ.– सी	01.09.2023
114.	श्री विनीत तिवारी	त.अ.– सी	01.09.2023
115.	श्री परवेश कुमार	त.अ.– सी	01.09.2023
116.	श्री प्रवीण कुमार	त.अ.– सी	01.09.2023
117.	श्री रोहित पाल	त.अ.– सी	01.09.2023
118.	सुश्री पूनम रानी	त.अ.– सी	01.09.2023
119.	श्री अमित कुमार	त.अ.– सी	01.09.2023
120.	श्री उमेश कुमार	त.अ.– सी	01.09.2023
121.	श्री आशुतोष सक्सेना	त.अ.– सी	01.09.2023
122.	श्रीमती बबीता कुमारी	त.अ.– बी	01.09.2023
123.	श्रीमती दिव्या सिंह	त.अ.– बी	01.09.2023
124.	श्री राजेश कुमार	त.अ.– बी	01.09.2023
125.	श्री मुकेश कुमार शर्मा	त.अ.– बी	01.09.2023
126.	श्री सन्दीप कुमार यादव	त.अ.– बी	01.09.2023
127.	श्री सुनील कुमार	त.अ.– बी	01.09.2023
128.	श्री नवनीत कुमार	त.अ.– बी	01.09.2023
129.	श्री गुंजन कुमार गौरव	त.अ.– बी	01.09.2023
130.	श्री भरत सिंह चौहान	त.अ.– बी	01.09.2023
131.	श्री प्रमोद कुमार	त.अ.– ए	01.09.2023
132.	श्रीमती सुभद्रा कुमार	त.अ.– ए	01.09.2023
133.	श्री नवीन कुमार	त.अ.– ए	01.09.2023
134.	श्री चेतन कुमार	त.अ.– ए	01.09.2023
135.	श्री सुरजीत विश्वास	त.अ.– ए	01.09.2023
136.	श्री विपिन सिंह गुसाईं	त.अ.– ए	01.09.2023

137. श्री प्रकाश सिंह	त.अ.–ए	01.09.2023
138. श्री मनोज कुमार	त.अ.	01.09.2023
139. श्री अरुण कुमार	त.अ.	01.09.2023
140. श्री बी.डी. पाण्डे	त.स.–बी	01.09.2023
141. श्री अनिल कुमार नायक	त.स.–बी	01.09.2023
142. श्री अशोक कुमार	तक.–सी	01.09.2023
143. श्री अजय प्रसाद	तक.–सी	01.09.2023
144. श्री हेमन्त कुमार	तक.–सी	01.09.2023
145. श्री लक्ष्मण तिर्की	तक.–सी	01.09.2023
146. श्री सुरेश सिंह	तक.–बी	01.09.2023
147. श्री चन्दन कुमार गुप्ता	तक.–बी	01.09.2023
148. श्री अमित कुमार	तक.–बी	01.09.2023
149. श्री रचित शर्मा	व.त.स.–बी	24.11.2023
150. श्री मोहित प्रताप सिंह	व.त.स.–बी	24.11.2023

संस्थान में स्थानान्तरण पर आए

01जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(सुस्वागतम)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री रवीन्द्र प्रसाद	तकनी.बी	20.03.2023
2.	श्री योगेश चौहान	लेखाकार	24.03.2023
3.	श्री रितेश राना	ली.फायरमैन	17.04.2023
4.	श्री सुनील पाल	ला.फायरमैन	18.04.2023
5.	श्री योगेश चन्द्र	त.अ.–ए	31.07.2023
6.	श्री मनोज कुमार	तक.–बी	31.07.2023
7.	श्रीमती श्वेता नागरा	वैज्ञा.– ई	02.08.2023
8.	श्री जितेन्द्र सिंह	वैज्ञा.– एफ	28.08.2023
9.	श्री विजय कुमार	त.अ.–ए	25.09.2023
10.	श्री राजीव जुयाल	व.त.स.–बी	25.09.2023
11.	श्रीमती दीपिका पोरवाल	वैज्ञा.–डी	16.11.2023
12.	श्री शिशिर कुमार पाण्डेय	लेखाकार	24.11.2023
13.	श्री मोहित राना	वी.ओ.–ए	19.12.2023

संस्थान में स्थानान्तरण पर गए

01जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(शुभकामनाएँ)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री राजीव कुमार	त.अ.– बी	02.02.2023
2.	श्री दिगम्बर सिंह	व.प्र.स.	08.02.2023
3.	श्री अखिल बाजपेई	प्रशा.स.–बी	07.04.2023
4.	कु. वर्षा अग्रवाल	वैज्ञा.– एफ	17.05.2023
5.	श्री चरन सिंह	तक.स.–बी	24.05. 2023
6.	श्री अशोक कुमार शर्मा	प्रशा.अधि.	31.07.2023
7.	श्री विरेन्द्र कुमार	त.अ.–सी	08.09.2023
8.	श्री नरेन्द्र सिंह	त.अ.–ए	18.09.2023
9.	श्रीमती नीता काण्डपाल	वैज्ञा.–जी	17.11.2023
10.	श्रीमती निशा शर्मा	निजि सचिव	20.11.2023
11.	श्री मनोज कुमार	निजि सचिव	20.11.2023
12.	श्री प्रकाश नीरव	व.अनु.अ.	28.11.2023
13.	श्री साहिल छिल्लर	वी.ओ.–ए	22.12.2023

संस्थान सेवानिवृत्तियाँ

01जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(शुभकामनाएँ)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री अनिल कुमार सिंह	वैज्ञा.–ई	31.01.2023
2.	श्री राजीव जुगरान	त.अ.– बी	31.01.2023
3.	श्री रमेश कुमार	त.अ.	28.02य2023
4.	श्री के.आर.एस.नेगी	भण्डार अधि.	31.03.2023
5.	श्री दिगम्बर सिंह	प्रशा.अधि.	31.03.2023
6.	श्री जगन नाथ पाल	तक.–सी	31.03.2023
7.	श्री अशोक कुमार	त.अ.– डी	30.04.2023
8.	श्री चन्द्र पाल सिंह	त.अ.	31.05.2023
9.	श्रीमती सरला पाण्डेय	व.प्र.स.	30.06.2023
10.	श्री जी.सी. सती	व.प्र.अ.– ।।	31.08.2023
11.	श्री एस.सी. कुमार	वैज्ञा.– एफ	30.09.2023
12.	श्री राजेश कुमार	त.अ.–डी	31.10.2023
13.	श्री बी.एम. अग्रवाल	त.अ.–सी	31.10.2023
14.	श्री आर.सी.उपाध्याय	त.अ.–सी	31.10.2023
15.	श्री कुलदीप सिंह	डी.पी.ओ.	31.10.2023
16.	श्री राजेन्द्र कनोजिया	एम.टी.एस.	31.10.2023
17.	श्री नीरज भार्गव	वैज्ञा.–एच	31.12.2023
18.	श्रीमती पवित्री देवी	ए.एल.एस.– ।	31.12.2023
19.	श्री काली चरण	एम.टी.एस.	31.12.2023

संस्थान में सेवा से त्यागपत्र

01जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(शुभकामनाएँ)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री सुनील कुमार	वी.ओ.–बी	03.02.2023
2.	श्रीमती कोमल शर्मा	वैज्ञा.– डी	22.05.2023
3.	श्री जयदीप पाल	व.त.स.–बी	10.10.2023

संस्थान में आकस्मिक निधन

01जनवरी 2023 से 31 दिसम्बर 2023

(भाव संवेदनाएँ)

क्र.	नाम	पदनाम	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री राजन मिनोचा	व.भ.स.	31.08.2023

माँ

राकेश मोहन रावत

आज जब घर की चौखट पर
मेरे पदचाप मेरी आहट वापस
मुझ तक लौट आई...
पर माँ की आवाज घर के अंदर से
नहीं आई...
अचानक पलकों पर
नमी सी उभर आई
जब नहीं मिली घर के कोनों में
माँ की परछाईं ...

अरे तू आ गई ..!
कब आई ...?
कैसे आई..?
अकेली आई ...!

मगर आज ये सम्बोधन
ये आवाज कहीं से भी
उभर कर नहीं आई...

क्या खायेगी...?
कैसी है तू...?
अपना ध्यान रखा कर !
दुबली हो रही है..!
मैंने अचार बनाया है ले जाना...

कौन मारेगा मुझे
मायके न आने का ताना...??
मैं इतनी खाली हो जाऊंगी..
ये बात अब तक खुद को न समझा पाई...

मैं यथावत सी माँ से मिलने आई थी
मगर बिसरा चुकी थी कि
माँ अब नहीं रही...

अब खोजती हूँ माँ को स्मृतियों में
माँ रहने से एक सहारे का
विश्वास रहता था
हर वक्त जुबान पर
उसी का नाम रहता था
अब भी याद है माँ का बुलाना
और मेरा ये कह कर टाल जाना
कि माँ अभी आई माँ अभी आई....

हमारा आईआरडीई संस्थान

अनुराधा शर्मा
धर्मपत्नी विपिन शर्मा

इंद्रधनुषी रंगों वाला....
सबसे अनुपम, सबसे न्यारा....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

देवभूमि की इस धरती पर,
जब सूरज तिलक लगाता है...
आईआरडीई का हर वैज्ञानिक,
तब इतिहास नया रचाता है...
दुश्मन के छक्के छूट जाएं,
ऐसे शस्त्र बनाता है....
घुप्प अंधेरे में दिख जाए,
ये ऐसे यंत्र बनाता है....

सबसे सुंदर, सबसे प्यारा....
सबसे अद्भुत, सबसे न्यारा....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

टारगेट कितनी दूर अभी है,
ये रेंज फाइंडर बतलाता है....
अंबर, धरती पर, लेजर सीकर....
कुछ ऐसा खेल दिखाता है....
राह दिखाकर, मिसाइल को,
टारगेट तक पहुँचाता है....
नेश्तानाबूत करके दुश्मन को,
आईआरडीई का मान बढ़ाता है

सब का मान, सब की शान....
हम सब का है ये अभिमान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

लेजर डेजिग्नेटर की किरणें....
जब दुश्मन के टैंक पर,
घात लगाती हैं....
पलक झपकते ही, दुश्मन को,
मिट्टी में मिलवाती हैं....
लक्ष्य भेदन की ये ताकत....
दुश्मन का दिल दहलाती है....
दुश्मन के नापाक इरादों को....
ये धूल चटाती हैं....
विध्वंस करके शत्रु का ये....
नामोनिशान मिटाती हैं....

देवों की इस धरती पर....
ईश्वर का है ये वरदान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

प्रॉक्सिमिटी फ्यूज, मिसाइल से
अपनी मित्रता निभाता है....
बखूबी वह आसमान में....
अपना काम दिखाता है....
पास जाते ही टारगेट के....
मिसाइल से विस्फोट कराता है
आईआरडीई के नाम को....
ये ध्रुव तारा सा चमकाता है....

आसमान में चंद्रमा जैसे....
उत्तराखंड में आईआरडीई वैसे....
हम सब की है ये पहचान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

पेरास्कोपिक साईट सिस्टम और
IRST....
ये चार चाँद लगाते हैं....
जल में, थल में और गगन में....
नए आयाम बनाते हैं....
दिव्य चक्षु देकर सबमरीन को....
दुश्मन को पानी पिलाते हैं....

ई–ओ– सेंसर्स और जिंबल....
सबकी शोभा बढ़ाते हैं....
मिसाइल हो नभ में या....
टैंक धरा पर....
सबका साथ निभाते हैं....
और भला मैं लिखूं क्या–क्या....
शब्द कम पड़ जाते हैं....
विश्व–पटल पर ये सब....
भारत का सैन्य क्षमता बढ़ाते हैं....

डीआरडीओ की हैं ये जान....
हम सबका है ये अभिमान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....
हमारा आईआरडीई संस्थान....

संस्थान में वर्ष 2023 के दौरान अति विशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण

17.03.2023 को एडमिरल कर्मवीर सिंह, पीवीएसएम, एवीएसएम (से.नि.) सलाहकार, रक्षा विभाग, आर.एण्ड डी. का परिभ्रमण

12.06.2023 को वाइस एडमिरल जी श्रीनिवासन, पीडीएटीवीपी, एवीएसएम, वीएसएम का परिभ्रमण

25.04.2023 को रियर एडमिरल शिशिर वर्मा, वीएसएम का परिभ्रमण

23.06.2023 को रियर एडमिरल बी शिवकुमार, एवीएसएम, वीएसएम तथा रियर एडमिरल एस गैंटायट, वीएसएम का परिभ्रमण

संस्थान में वर्ष 2023 के दौरान अति विशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण

28.07.23 को वाइस एडमिरल संदीप नैथानी, एवीएसएम, वीएसएम का परिभ्रमण

28.07.23 को वाइस एडमिरल संदीप नैथानी, एवीएसएम, वीएसएम का परिभ्रमण

29.11.23 को सी.आई.एस.एफ. टीम का परिभ्रमण

12.12.23 को एवीएम तरुण चौधरी, वीएसएम, एसीएएस (परियोजना) का परिभ्रमण

डॉ. बि.के. दास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, ई.सी.एस. के साथ डी.आर.सी. कमेटी का परिभ्रमण दि. 03.11.2023

संस्थान में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन - वर्ष 2023

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन : 14-28 सितम्बर, 2023

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन : 14-28 सितम्बर, 2023

संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह : 28 सितम्बर, 2023

दि. 28.09.2023 को हिन्दी पखवाड़ा समापन के अवसर पर हास्य नाटक 'रस्सी का साँप' के परिदृश्य

संस्थान के स्थापना दिवस एवं वार्षिक खेलकूद के परिदृश्य - 2023

संस्थान के स्थापना दिवस एवं वार्षिक खेलकूद के परिदृश्य - 2023

संस्थान की गतिविधियाँ - वर्ष 2023

संस्थान की गतिविधियाँ - वर्ष 2023

सेवानिवृत्तियाँ - वर्ष 2023

श्री नीरज भार्गव
उत्कृष्ट वैज्ञानिक

श्री एस.सी. कुमार
वैज्ञानिक-एफ

श्री बी.एम. अग्रवाल
तकनीकी अधिकारी-सी

श्रीमती सरला पाण्डे
वरि. प्रशासनिक सहायक

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह - वर्ष 2023

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह - वर्ष 2023

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह - वर्ष 2023

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह - वर्ष 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान
देहरादून

डॉ. अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, अध्यक्ष

श्रीमती रूमा ढाका
वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक

डॉ. ललित मोहन पंत
वैज्ञानिक 'एफ'
समूह निदेशक राजभाषा
उपाध्यक्ष, रा.का.स.

श्री कृष्ण मुरारी
तकनीकी अधिकारी 'सी'
सूमह प्रमुख राजभाषा
राजभाषा अधिकारी, सदस्य सचिव

श्री पुनीत वाशिष्ठ
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य

डॉ. सुधीर खरे
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य

श्री जे.पी. सिंह
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य

श्री अशोक कुमार
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य

डॉ. मानवेन्द्र सिंह
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य

डॉ. ए.के. साहनी
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य

डॉ. पंकज श्रीवास्तव
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य

डॉ. प्रभात शर्मा
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य

श्री अमित कुमार
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य

श्रीमती स्मिता शर्मा
वैज्ञानिक 'डी', सदस्य

श्री योगेश सक्सेना
वैज्ञानिक 'ई',
सदस्य

श्री हितेश कुमार
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
सदस्य

श्री ध्यान सिंह मेहरा
भण्डार अधिकारी,
सदस्य

श्रीमती रितु रोहिला
तकनीकी अधिकारी 'बी',
सदस्य

श्री एच. एस. गुसाई
तकनीकी अधिकारी 'बी',
सदस्य

श्री पवन कुमार सूरज
तकनीकी अधिकारी 'बी',
सदस्य

श्री त्रिलोक सिंह
डी.पी.ओ., सदस्य
प्रभारी अधिकारी राजभाषा

श्री अमित कुमार पटेल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
सदस्य

श्रीमती सरोज कुमार
प्रशासनिक अधिकारी,
सदस्य

श्री गोपाल
प्रशासनिक अधिकारी,
सदस्य

श्री बिरेन्द्र सिंह भण्डारी
तकनीकी अधिकारी 'ए',
सदस्य

श्रीमती आर्निका सोनी
तकनीकी अधिकारी 'ए',
सदस्य

मुखपृष्ठ अभिकल्पन : श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ एवं श्रीमती रितु रोहिला, त.अ.-बी

उत्तराखण्ड की शीर्ष चोटियाँ

नन्दा देवी (7816 मी.)

कामेत (7756 मी.)

चौखम्बा (7138 मी.)

संतोपथ (7075 मी.)

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान

रायपुर रोड, देहरादून - 248008